اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾

आयत नं० 45

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि आप रसूल हैं इसलिए) **जो किताब आप पर वही की गई है आप उसको** (लोगों तक पहुंचाने के लिए उनके सामने) **पढ़ा कीजिए और** (ज़बानी तबलीग़ के साथ दीन के काम करके भी बताइये ख़ासकर) **नमाज़ की पाबन्दी रखिए,** (क्योंकि इबादत के सब कामों में नमाज़ बड़ी इबादत भी है और इसके असरात दूर तक पहुंचते हैं कि) **बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती रहती** (है कि दिल पर उस का ऐसा ही असर होता) **है, और** (इसी तरह नमाज़ के सिवा जितने नेक काम हैं सब पाबन्दी के लाइक़ हैं क्योंकि वो सब अल्लाह की याद ही हैं और) **अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है, और** (अगर तुम अल्लाह की याद में बेपरवाई करो तो यह भी सुन लो कि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों को जानता है** (जैसा करोगे वैसा बदला पाओगे)(45)

नोटः- एक हदीस में है कि "जिस आदमी को उसकी नमाज़ ने बुरे कामों और गुनाह से नहीं रोका उसकी नमाज़ कुछ नहीं"। (तिबरानी)
(यानी वो नमाज़ का हक़ अदा नहीं कर रहा अपनी नमाज़ को सुधारे वर्ना नमाज़ की तासीर और उसका असर ये है कि उसके पढ़ने वालों को गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ हो जाती है अगर ऐसा नहीं तो उसकी नमाज़ में कोई गड़बड़ थी)।

وَ لَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَ
اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ اِلٰهُنَا وَ اِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَ مِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ مَا كُنْتَ تَتْلُوْا
مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۰﴾ اَوَ لَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّ ذِكْرٰى

لِقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۱﴾ قُلۡ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيۡنِىۡ وَ بَيۡنَكُمۡ شَهِيۡدًا ۚ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
بِالۡبَاطِلِ وَ كَفَرُوۡا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۵۲﴾ وَ يَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالۡعَذَابِ ؕ وَ لَوۡ لَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ
الۡعَذَابُ ؕ وَ لَيَاۡتِيَنَّهُمۡ بَغۡتَةً وَّ هُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۵۳﴾ يَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالۡعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيۡطَةٌۢ
بِالۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۵۴﴾ ۙ يَوۡمَ يَغۡشٰهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ فَوۡقِهِمۡ وَ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِهِمۡ وَ يَقُوۡلُ ذُوۡقُوۡا مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۵۵﴾

आयत नं० 46 से 55

और (ऐ ईमान वालो जो पैग़म्बर का इनकार करते हैं उन) **किताब वालों के साथ तुम बहस न करो सिवाए अच्छे तरीक़े के** (यानी बहस की नौबत आए तो अच्छे तरीक़े से बहस करो जैसे सख़्त बात का जवाब नर्म बात से गुस्से का जवाब सहार से दो), **हां जो उनमें ज़्यादती करें** (तो उनको जवाब पर जवाब देने में हरज नहीं मगर बेहतर फिर भी अच्छा ही तरीक़ा है) **और** (वो अच्छा तरीक़ा यह है कि उन से) **यह कहो कि हम इस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हम पर उतारी गई और उन किताबों पर भी** (ईमान रखते हैं) **जो तुम पर उतारी गईं** (सो जब कुरआन का भी अल्लाह की तरफ़ से होना साबित है तो तुम को भी कुरआन पर ईमान लाना चाहिए) **और** (यह तो तुम भी मानते हो कि) **हमार और तुम्हारा ख़ुदा एक है और हम तो उसी के हुक्म पर चलते हैं** (इसी तरह तुम को भी चाहिए और आख़री नबी के आने की ख़बर तुम्हारी किताबों में भी मौजूद है तो तुम को हमारे नबी पर ईमान लाना चाहिए)(46) **और** (जिस तरह हम ने पहले पैग़म्बरों पर किताबें उतारीं) **इसी तरह हम ने आप पर किताब उतारी, सो जिन लोगों को हम ने किताब** (की सही समझ) **दी है वो इस** (आप वाली) **किताब** (कुरआन) **पर ईमान ले आते हैं** (और उन से बहस की नौबत भी कम ही आती है) **और इन** (अरब के मुशरिक) **लोगों में भी कुछ ऐसे** (इन्साफ़ वाले) **हैं कि इस किताब पर ईमान ले आते हैं** (चाहे ख़ुद समझ कर या इल्म वालों से जान कर), **और** (साफ़ दलीलें जान कर भी) **हमारी** (इस किताब की) **आयतों का सिवाए** (ज़िद्दी) **काफ़िरों के और कोई इनकार नहीं करता(47) और आप इस किताब** (यानी कुरआन) **से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे ऐसी सूरत में ये झूटे लोग शुबह निकालते हैं** (कि ये लिखे पढ़े आदमी हैं आसमानी किताबें देखभाल कर वहां से लिख कर और याद करके हम लोगों को सुना दीं)(48) **बल्कि यह किताब ख़ुद बहुत साफ़ दलील** (लिए) **है** (जो) **उन लोगों के सीनों में** (खुलती है) **जिन को इल्म मिला** (है), **और** (खुले मोजिज़े

के बावजूद) **हमारी आयतों का बस ज़िद्दी लोग इनकार किये जाते हैं** (वर्ना इन्साफ़ वाले को तो ज़रा शक न रहना चाहिए)(49) **और ये लोग** (हटधर्मी से) **यह कहते हैं कि इन** (पैग़म्बर) **पर उन के रब के पास से** (हमारी मांगी) **निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं, आप यह कह दीजिए कि वो निशानियां तो अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं, और** (मेरे बस की बात नहीं) **मैं तो सिर्फ़ एक साफ़** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **हूं** (और पैग़म्बर होने पर सही दलीलें रखता हूं जिन में सबसे बड़ी दलील क़ुरआन है फिर ख़ास आप की मांगी दलील की क्या ज़रूरत है)(50) **क्या** (पैग़म्बरी के सबूत में) **उन लोगों को यह बात काफ़ी नहीं हुई कि हम ने आप पर यह** (मोजिज़े वाली) **किताब उतारी है जो उन को** (सदा) **सुनाई जाती रहती है** (अगर एक बार में बात समझ में न आए तो दूसरी तीसरी बार में समझ में आ जाए और दूसरे मोजिज़ों में तो यह बात भी न होती बल्कि एक बार मोजिज़ा सामने आ जाता), **बेशक इस किताब में** (मोजिज़ा होने के साथ) **ईमान वालों के लिए बड़ी रहमत और नसीहत है**(51) (अगर इस पर भी ईमान न लाएं तो) **आप कह दीजिए कि** (अच्छा भाई मत मानो) **अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच** (पैग़म्बरी का) **गवाह काफ़ी है उस को सब चीज़ की ख़बर है जो आसमान में है और ज़मीन में है, और जो लोग झूटी बातों पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह** (की बातों) **का इनकार करते हैं** (जिनमें पैग़म्बरी भी दाख़िल है) **तो वो लोग बड़े नुक़सान में हैं** (यानी जब अल्लाह के हुक्म से मेरी पैग़म्बरी साबित है तो इस का इनकार अल्लाह के साथ कुफ़्र है)(52) **और ये लोग आप से अज़ाब** (लाने) **का तक़ाज़ा करते** (हैं और फ़ौरन अज़ाब न आने से पैग़म्बरी में शक व इनकार करते) **हैं, और अगर** (अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब आने में) **वक़्त तय न होता तो** (इन के तक़ाज़े के साथ ही) **उन पर अज़ाब आ चुका होता, और** (जब वो वक़्त आजाएगा तो) **वो अज़ाब उन पर अचानक आ पहुंचेगा और उन को ख़बर भी न होगी**(53) **ये लोग आप से अज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं, और** (अज़ाब की सूरत यह है कि) **इसमें कुछ शक नहीं कि जहन्नम इन काफ़िरों को** (चारों तरफ़ से) **घेर लेगी**(54) **जिस दिन कि उन पर अज़ाब उन के ऊपर से और उनके नीचे से घेर लेगा और** (उस वक़्त उनसे) **अल्लाह तआला कहेगा कि जो कुछ** (दुनिया में) **करते रहे हो** (अब उस का) **मज़ा चक्खो**(55)

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मी होना आप का बड़ा मोजिज़ा है कि लिखना पढ़ना नहीं जानते थे (उम्मी थे) और ऐसा कलाम आप की ज़बान से जारी होने लगा जिसकी मिसाल बड़े-बड़े आलिम न ला सके।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا
تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اَللّٰهُ
يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

आयत नं० 56 से 63

ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो (जब ये लोग दुशमनी से तुम को दीन पर चलने में सताते हैं तो यहां रहना क्या ज़रूरी है) **मेरी ज़मीन फैली हुई है सो** (अगर यहां रहकर इबादत नहीं कर सकते तो और कहीं चले जाओ और वहां जाकर) **ख़ालिस मेरी ही इबादत करो(56)** (और घर छोड़ते हुए रिशतेदारों, दोस्तों की जुदाई भारी लगती हो तो यह समझ लो कि एक न एक दिन यह तो होना ही है क्योंकि) **हर आदमी को मौत का मज़ा चखना** (ज़रूर) **है** (आख़िर उस वक़्त सब छूटेंगे और) **फिर तुम सब को हमारे पास आना** (है और नाफ़रमान होकर आने में सज़ा का डर) **है(57) और** (यह जुदाई अगर हमारे दीन के लिए है तो हमारे पास पहुंचने के बाद इस वादे के हक़दार हो जाओगे कि) **जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये** (और अगर ज़रूरी हुआ तो वतन भी छोड़ा) **हम उन को जन्नत के** (ऐसे) **झरोंकों में जगह देंगे जिन के** (महलों के) **नीचे से नहरें बहती होंगी** (और) **वो उनमें सदा-सदा रहेंगे,** (और उन नेक) **काम करने वालों का क्या अच्छा बदला है(58) जिन्होंने** (मुश्किलों में) **सब्र किया और** (दूसरे मुल्क या शहर में जाकर जो तकलीफ़ों का और गुज़ारे की मुश्किलों का ख़तरा था उसमें) **वो अपने रब पर भरोसा किया करते थे(59) और** (अगर हिजरत में तुम को यह ध्यान आता हो कि परदेस में खाने को कहां से मिलेगा तो यह समझ लो कि) **बहुत से जानवर ऐसे हैं जो अपना खाना उठा कर** (यानी जमा करके) **नहीं रखते** (चाहे कुछ जमा भी करते हैं मगर बहुत से नहीं भी करते) **अल्लाह ही उन को** (अपनी क़ुदरत से) **रोज़ी पहुंचाता है और तुम को भी** (पहुंचाता है चाहे तुम कहीं हो बस अल्लाह पर भरोसा रक्खो) **और**

(वो भरोसे के लाइक़ है क्योंकि) **वो सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है(60) और** (तौहीद की दलील के लिए) **अगर आप उनसे पूछें कि** (भला) **वो कौन है कि जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और जिसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है तो वो लोग ये ही कहेंगे कि वो अल्लाह है, फिर किधर उल्टे चले जा रहे हैं** (जब पैदा करने वाला वो अकेला है तो इबादत के लाइक़ भी वो ही है)(61) **अल्लाह** (जैसा पैदा करने वाला है उसी तरह रोज़ी देने वाला भी वो ही है बस वो) **अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी ज़्यादा कर देता है और जिसके लिए चाहे कम कर देता है, बेशक अल्लाह ही सब चीज़ों के हाल को जानता** (है जिसमें भलाई समझता है वैसी ही रोज़ी देता) **है(62) और अगर आप उनसे पूछें कि वो कौन है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे ज़मीन को उसके सूख जाने** (खेती के क़ाबिल न रहने) **के बाद तरो ताज़ा** (खेती के क़ाबिल) **बना दिया तो** (जवाब में) **वो लोग ये ही कहेंगे कि वो भी अल्लाह ही है, आप कहिए अलहम्दु लिल्लाह** (इतना तो इक़रार किया यह भी ख़ुदा के एक होने की दलील है मगर ये लोग मानते नहीं), **बल्कि इनमें अक्सर लोग समझ से काम नहीं लेते** (और सोच विचार नहीं करते)(63)

मसअलाः- जिस शहर या मुल्क में इन्सान को अपने दीन पर क़ाइम रहने की आज़ादी न हो वो कुफ़्र या शिर्क या शरीअत के हुक्मों के ख़िलाफ़ चलने पर मजबूर हो वहां से हिजरत करके किसी दूसरे शहर या मुल्क जहां दीन पर अमल की आज़ादी हो चला जाना वाजिब है शर्त यह है कि वहां से जा सकता हो वर्ना मजबूर है लेकिन जिस शहर में दीन के हुक्मों पर चलने की आज़ादी हो वहां से हिजरत फ़र्ज़ या वाजिब तो नहीं लेकिन जिस शहर में गुनाह और बेहयाई आम हो उसको छोड़ देना मुसतहब्ब है। (मआरिफुल कुरआन)

وَ مَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا
رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ۙ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَيْنٰهُمْ ۚۙ وَ لِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ يُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ
حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ

سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

आयत नं० 64 से 69

और (वजह उन के सोच विचार न करने की दुनिया के कामों की धुन है हालांकि) **यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं, और असल ज़िन्दगी आख़रत** (की है जैसा कि दुनिया फ़ना होने वाली और आख़रत बाक़ी रहने वाली है बस फ़ानी के चक्कर में आख़रत को भूलना ना इन्साफ़ी) **है, अगर उन को इस का** (काफ़ी) **इल्म होता** (तो ऐसा न करते कि फ़ानी के चक्कर में पड़ कर बाक़ी को भुला देते)(64) **फिर** (चाहिए तो यह था कि एक ख़ुदा को मानते जैसा कि) **जब ये लोग कशती में सवार होते हैं** (और वो कशती डगमगाने लगती है) **तो** (उस वक़्त) **ख़ालिस ऐतक़ाद कर के अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं,** (मगर) **फिर जब उन को** (इस मुसीबत से) **बचा कर सूखे** (यानी ज़मीन) **की तरफ़ ले आता है तो फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं**(65) **जिस का मतलब यह है कि हम ने जो नेमत उन को दी है** (कि उन को बचाया) **उस की नाशुक्री करते हैं और ये लोग कुछ दिन और मज़े कर लें फिर जल्दी ही उन को सब पता चल जाएगा**(66) **और** (वो यह कहते हैं कि अगर हम मुसलमान हो जाएं तो हमें अरब के लोग मार देंगे तो) **क्या उन लोगों ने यह नहीं देखा कि हम ने** (उन के शहर मक्का को) **अमन वाला हरम बनाया है और उनके आस पास** (की जगहों) **में** (जो हरम से बाहर हैं) **लोगों को** (मार-मार कर उन के घरों से) **निकाला जा रहा है** (जब कि ये अमन से बैठे हैं), **फिर** (सच्चाई जानने के बाद इस बेवक़ूफ़ी और ज़िद का) **क्या** (ठिकाना है कि) **ये लोग झूटे माबूदों पर तो ईमान लाते हैं** (जिस पर ईमान की कोई दलील नहीं) **और अल्लाह** (जिस पर ईमान लाना चाहिए उस) **की नेमतों की नाशुक्री** (यानी अल्लाह के साथ शिर्क) **करते हैं**(67) **और** (सच बात यह है कि) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ना इन्साफ़ होगा जो** (बिना दलील) **अल्लाह पर झूट बान्धे** (कि वो अपना साझी रखता है) **और जब सच्ची बात उसके पास** (दलील के साथ) **पहुचें वो उस को झुटला दे, क्या ऐसे काफ़िरों का** (जो ऐसी ना इन्साफ़ी करें) **जहन्नम में ठिकाना न** (होगा यानी ज़रूर) **होगा**(68) **और** (इसके उलट) **जो लोग हमारी राह में तकलीफ़ें सहते हैं हम उन को अपने** (नज़दीकी व सवाब यानी जन्नत के) **रास्ते ज़रूर दिखाएंगे** (जिससे वो जन्नत में जा पहुंचेगें), **और बेशक अल्लाह तआला** (की रहमत) **नेकी करने वालों के साथ है** (दुनिया में भी और आख़रत में भी)(69)।

नोटः- हज़रत अबुदर्दा रज़ि० कहते हैं कि जो इल्म लोगों को दिया गया है जो लोग अपने इल्म पर अमल करने में जिहाद (यानी कोशिश) करते हैं उन पर दूसरे इल्म भी खोल दिये जाते हैं जो अब तक हासिल नहीं।

और फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० कहते हैं कि जो लोग इल्म की चाह में कोशिश करते हैं उनके लिए अमल भी आसान कर दिया जाता है। (मज़हरी)

30-सूरत-रूम

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '60' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝٢ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝٣ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ
قَبْلُ وَ مِنْۢ بَعْدُ ؕ وَ يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٤ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٥
وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ وَ
هُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٧

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)**(01) रोम वाले** (ईरान वालों से) **हार गये(02) क़रीब की ज़मीन में** (यानी सरहदों से नज़दीक एक जंग में हार गये जिससे मुशरिक लोग ख़ुश हुए क्योंकि ईरान वाले आग के पुजारी थे और रूमी किताब वाले थे भले ही मुसलमान न थे) **और वो** (रूमी) **अपने हारने के बाद जल्द ही** (दूसरे मुक़ाबिले में ईरानियों से) **जीत जाएंगे(03) तीन साल से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर,** (और यह हार जीत सब अल्लाह की तरफ़ से है क्योंकि हार से) **पहले भी सब काम अल्लाह ही के हाथ में थे** (जिससे हरा दिया था) **और हारने के बाद भी** (अल्लाह ही के हाथ में है जिससे जिता देगा)**, और उस दिन** (यानी जिस दिन रोम वाले जीतेंगे) **मुसलमान ख़ुश होंगे(04) अल्लाह की इस मदद** (पर यानी मुसलमानों का कहा सच साबित हो जाने) **पर,** (क्योंकि मदद अल्लाह के हाथ में है) **वो जिसको चाहे जिता देगा, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला है काफ़िरों को जब चाहे हरादे और) **रहमत वाला** (भी) **है** (मुसलमानों को जब चाहे जितादे)**(05) अल्लाह तआला ने इसका वादा किया है,** (और) **अल्लाह तआला अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता** (इसलिए यह कही हुई बात ज़रूर पूरी होगी) **लेकिन अक्सर लोग** (अल्लाह की बातों को) **नहीं जानते(06)** (इन लोगों का अल्लाह तआला और पैग़म्बरी से बेपरवाह व अन्जान रहना इस वजह से है कि) **ये लोग सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगानी की सामने की हालत को**

जानते हैं और ये लोग आख़रत से (बिल्कुल ही) **बेख़बर हैं** (कि वहां क्या होगा, इसलिए उनको दुनिया में न अज़ाब की चीज़ों से बचने का ध्यान है न बख़्शिश के सामान ईमान और नेक काम की तलाश है)(07)।

नोटः- रूम वालों और ईरान वालों में अक्सर जंग होती रहती थी रूम वाले आसमानी किताब तौरेत इन्जील के मानने वाले थे और मुसलमान आसमानी किताब क़ुरआन के मानने वाले जब कि ईरान वाले आग के पुजारी मुशरिक थे तो मक्का के मुशरिकों ने रूमियों को मुसलमानों का नज़दीक समझ कर उनकी हार पर ख़ुशियां मनाईं कि जिस तरह वो किताब वाले हारे इसी तरह तुम भी हम से हारोगे इस पर यह ख़बर दी गई कि जल्दी ही ईरानी हार जाएंगे और रूमी जीतेंगे और इस ख़बर का सच्ची होना क़ुरआन के आसमानी किताब होने और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह का रसूल होने की एक दलील भी थी और यह ख़बर अपने वक़्त पर पूरी होकर रही। इस तरह मुसलमान इस ख़बर के सच्ची होने पर ख़ुश हुए और मुशरिक अपनी बात पर हार गये।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِم ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ
كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ۝٨ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنٰتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٩ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ
أَن كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ۝١٠

आयत नं० 08 से 10

क्या (आख़रत की दलीलें सुन कर भी उनकी नज़रें दुनिया ही पर टिकी रहीं और) **उन्होंने अपने दिलों में नहीं सोचा कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उनके बीच में हैं किसी हिकमत** (व ज़रूरत) **ही से एक ख़ास वक़्त** (यानी क़ियामत) **तक के लिए पैदा किया** (है जैसा कि उसने आयतों में ख़बर दी है कि उनमें एक हिकमत कामों का बदला व सज़ा भी) **है, और** (ये ही क्या और) **बहुत से आदमी अपने रब के मिलने का इनकार करते**

हैं(08) **क्या ये लोग** (कभी घर से नहीं निकले और) **ज़मीन में चलने फिरे नहीं ताकि देखते कि जो** (काफ़िर) **लोग इन से पहले हो चुके हैं उन का** (आख़री) **अन्जाम क्या हुआ,** (जबकि) **वो इन से ताक़त में बढ़े हुए थे और उन्होंने ज़मीन को भी** (इन से ज़्यादा) **बोया जोता था और जितना इन्होंने** (सामान और मकान से) **इसको आबाद कर रक्खा है इससे ज़्यादा उन्होंने इस को आबाद किया था और उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे** (जिनको उन्होंने नहीं माना और अज़ाब से हलाक हुए जिनकी तबाही की निशानियां उनके उजड़े मकानों से जो मुल्क शाम के रास्ते में मिलते हैं दिखाई देती हैं), **सो** (इस तबाही में) **अल्लाह तआ़ला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता वो तो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे** (कि पैग़म्बरों का इनकार करके बर्बादी के हक़दार हुए)(09) **फिर** (आख़रत में) **ऐसे लोगों का अन्जाम जिन्होंने** (ऐसा) **बुरा काम** (यानी पैग़म्बरों का इनकार) **किया था बुरा ही हुआ** (यानी दोज़ख़ की सज़ा और यह) **इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयतों** (यानी हुक्मों व ख़बरों) **को झुटलाया था और** (झुटलाने से बढ़ कर यह कि) **उनकी हंसी उड़ाते थे**(10)

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَ كَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآئِ
الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 11 से 19

अल्लाह तआ़ला मख़लूक़ को पहली बार भी पैदा करता है फिर वो ही दोबारा भी उसको पैदा करेगा फिर (पैदा होने के बाद) **उसके पास** (हिसाब किताब के लिए) **लाए जाओगे**(11) **और जिस दिन क़ियामत होगी उस दिन मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग** (हिसाब के वक़्त) **हैरान रह जाएंगे** (यानी कोई सही बात उनसे न बन पड़ेगी)(12) **और** (इबादत में अल्लाह का साझी बनाए हुए) **उन के ख़ुदाओं में से उन का कोई सिफ़ारिशी न होगा और** (उस वक़्त ख़ुद) **ये लोग** (भी)

अपने (उन) **ख़ुदाओं का इनकार करेंगे**(13) **और जिस दिन क़ियामत होगी उस दिन** (अलग-अलग तरीक़े के मानने वाले) **सब लोग अलग-अलग हो जाएंगे**(14) (यानी) **जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किये थे वो तो** (जन्नत के) **बाग़ में ख़ुश होंगे**(15) **और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुटलाया था वो लोग अज़ाब में गरिफ़्तार होंगे** (यह मतलब है अलग-अलग होने का)(16) **सो** (जब ईमान व नेक कामों का फ़ाइदा जान चुके तो) **तुम** (ईमान व ऐतक़ाद के साथ) **अल्लाह की तस्बीह किया करो** (जिसमें नमाज़ भी आ गई और ख़ास कर) **शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त**(17) **और** (असल में वो इबादत का हक़दार भी है क्योंकि) **सारे आसमानों और ज़मीन में उसी की हम्द** (की तस्बीह) **होती है** (तो तुम को भी ज़रूर उसकी तस्बीह करनी चाहिए) **और सूरज ढलने के बाद** (भी तस्बीह किया करो) **और ज़ुहर के वक़्त** (भी तस्बीह किया करो इसमें सारी नमाज़ों के वक़्त आ गये)(18) **वो जानदार को बेजान से बाहर लाता है** (जैसे अन्डे से बच्चा) **और बेजान को जानदार से बाहर लाता है** (जैसे परिन्दे से अन्डा) **और ज़मीन को उसके मुर्दा हो** (जाने यानी सूख) **जाने के बाद ज़िन्दा** (यानी ताज़ा हरा भरा) **करता** (है तो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल) **है, और इसी तरह तुम लोग** (क़ियामत के दिन) **क़बरों से निकाले जाओगे**(19)

नोटः- ऊपर आयात में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र आ गया उनके वक़्तों के साथ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ
خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ
خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَهٗ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

आयत नं० 20 से 27

और उसी की (कुदरत की) **निशानियों में से एक यह** (बात) **है कि तुम को मिट्टी से पैदा किया** (या तो इस तरह कि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए जिन से सारी नस्ल चली और या इस तरह कि मनी की खुराक मिट्टी से पैदा होती है) **फिर थोड़े ही दिनों बाद** (क्या हुआ कि) **तुम इन्सान बन कर** (ज़मीन पर) **फैले हुए फिरते** (नज़र आते) **हो(20) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से** (एक) **यह** (बात) **है कि उसने तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **लिए तुम्हारी जिन्स की बीवियां बनाईं** (और फ़ाइदा यह है कि) **ताकि तुम को उन के पास आराम मिले और तुम मियां बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की, इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो सोच समझ से काम लेते हैं(21) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है और तुम्हारी बोलचाल और रंगरूप का अलग-अलग होना है, इस** (बात) **में** (भी) **समझदारों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं(22) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से तुम्हारा सोना लेटना है रात में और दिन में** (चाहे रात में ज़्यादा और दिन में कम हो) **और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है** (दिन को ज़्यादा और रात को कम), **इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो** (दलील को ध्यान से) **सुनते हैं(23) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से यह** (बात) **है कि वो तुम को** (बारिश के वक़्त) **बिजली** (चमकती हुई) **दिखाता है जिससे** (उसके गिरने का) **डर भी होता है और** (उससे बारिश की) **उम्मीद भी होती है और वो ही आसमान से पानी बरसाता है फिर उससे ज़मीन को उस के मुर्दा हो जाने** (यानी सूख जाने) **के बाद ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **कर देता है, इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो समझ से काम लेते हैं(24) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से** (एक) **यह** (बात) **है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म** (यानी इरादे) **से क़ाइम** (और टिके) **हैं,** (और एक दिन यह सब ख़त्म हो जाएगा), **फिर** (उस वक़्त यह होगा कि) **जब तुम को पुकार कर ज़मीन में से बुलाए तो तुम फ़ौरन निकल पड़ोगे** (और दूसरी दुनिया शुरू हो जाएगी)(25) **और** (ऊपर कुदरत की दलीलों से मालूम हो गया होगा कि) **जितने** (फ़रिशते और इन्सान वग़ैरह) **आसमान और ज़मीन में मौजूद हैं सब उसी के हैं** (यानी सब का वो ही मालिक है, और) **सब उसी के हुक्म के ताबे हैं(26) और वो ही है जो पहली बार पैदा करता है** (जैसा कि सब जानते हैं) **फिर वो ही दोबारा पैदा करेगा** (जैसा कि बताया गया) **और यह** (दोबारा पैदा करना तो) **उसके लिए** (और भी) **ज़्यादा आसान** (है

जैसा कि किसी भी चीज़ को पहली बार बनाने से दोबारा बनाना आसान होता) **है, और आसमान और ज़मीन में उसी की शान** (सबसे) **ऊंची है** (यानी न आसमानों में कोई ऐसा बड़ा है और न ज़मीन में) **और वो** (बड़ा) **ज़बरदस्त** (कुदरत वाला है बस अपनी कुदरत से सब को दोबारा पैदा करेगा और) **हिकमत वाला** (है इसलिए कि़यामत के आने में भेद छुपा) **है**(27)

नोटः- अल्लाह तआ़ला की ज़ात की कोई मिसाल नहीं हो सकती।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ ۙ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَ اتَّقُوْهُ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ لَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾ ۙ
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ اِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا
رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ ۙ لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ
اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾

आयत नं० 28 से 34

अल्लाह तआ़ला (शिर्क को बुरा और ग़लत साबित करने के लिए) **तुम से एक मिसाल तुम्हारे ही हालात में से बयान करते हैं,** (वो यह कि सोचो) **क्या तुम्हारे गुलामों में कोई आदमी तुम्हारे उस माल में जो हम ने तुम को दिया है साझी है कि तुम और वो उसमें बराबर** (का हक़ रखते) **हों जिन को तुम** (ख़र्च के वक़्त) **ऐसा समझते हो जैसा अपने आपस** (के साझी) **को समझते हो** (और उन से इजाज़त लेकर ख़र्च किया करते हो, खुली बात है कि गुलाम इस तरह साझी नहीं होता तो तुम्हारे बनाए हुए ये झूटे माबूद जो कि अल्लाह तआ़ला के गुलाम हैं इबादत में उसके साझी कैसे हो सकते हैं), **हम इसी तरह समझदारों के लिए दलीलें साफ़-साफ़ बयान करते रहते हैं**(28) (सो चाहिए तो यह था कि सही बात मान लेते और शिर्क छोड़ देते) **लेकिन ये ज़ालिम लोग बिना** (किसी सही) **दलील** (के सिर्फ़) **अपनी** (ग़लत) **राय के पीछे चल रहे हैं सो जिसको** (उसकी

हटधर्मी की वजह से) **अल्लाह** (ही) **गुमराह करे उसको कौन राह पर लाए, और** (जब इन गुमराहों को अज़ाब होने लगेगा तो) **उन का कोई हिमायती** (व मददगार) **न होगा(29) बस तुम** (झूटे दीनों से अलग और) **एक तरफ़ होकर अपना मुंह इस** (सच्चे) **दीन की तरफ़ रक्खो,** (और सब) **अल्लाह की दी हुई फ़ितरत पर चलो जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है** (मतलब इस फ़ितरत से यह है कि अल्लाह तआ़ला ने पैदाइश से यह बात रक्खी है कि वो अगर हक़ बात को सुनना और समझना चाहे तो वो समझ में आ जाती है तो इस फ़ितरत से काम लो, और) **अल्लाह तआ़ला की इस पैदा की हुई चीज़ को जिस पर उसने सब लोगों को पैदा किया है बदलना न चाहिए, बस** (सीधा) **रास्ता दीन** (का) **ये ही है लेकिन अक्सर लोग** (इसको न सोचने की वजह से) **नहीं जानते** (इसलिए इस पर नहीं चलते)**(30) तुम अल्लाह की तरफ़ लौ लगाकर अल्लाह की दी फ़ितरत पर चलो और** (उसकी मुख़ालफ़त और) **उस** (पर सज़ा) **से डरो और** (इस्लाम क़ुबूल करके) **नमाज़ की पाबन्दी करो और** (उन) **शिर्क करने वालों में से मत रहो(31) जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया** (यानी सच्चा दीन तो एक था और झूटे बहुत हैं उन्होंने हक़ को छोड़ कर अलग-अलग रास्ते अपना लिये) **और बहुत से** (अलग-अलग) **गिरोह** (और फ़िरक़े) **हो गये,** (और उनमें) **हर फ़िरक़ा अपने उस तरीक़े पर ख़ुश है जो उन के पास है(32) और** (तौहीद के इनकार के बावजूद) **जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुंचती है** (उस वक़्त बेचैन होकर) **अपने** (सच्चे) **रब को उसी की तरफ़ लौ लगा कर पुकारने लगते हैं** (और सब माबूदों को छोड़ देते हैं मगर) **फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको अपनी तरफ़ से कुछ महरबानी का मज़ा चखा देता है तो बस उनमें से कुछ लोग** (फिर) **अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं(33) जिसका मतलब यह है कि हमने जो** (आराम व ऐश) **उन को दिया है उसकी नाशुक्री करते हैं** (जो अक़्ल से भी बुरा है), **अच्छा कुछ दिन और मज़े उड़ा लो फिर जल्दी तुम को** (असलीयत का) **पता चल जाएगा(34)**

नोटः- अल्लाह तआ़ला ने हर इन्सान को अपनी फ़ितरत से मुसलमान पैदा किया है अगर उसके आस पास के माहौल में कोई ख़राब करने वाला ख़राब न कर दे तो हर पैदा होने वाला बच्चा मुसलमान ही होगा मगर होता यह है कि मां बाप उसको कभी-कभी इस्लाम के ख़िलाफ़ चीज़ें सिखा देते हैं जिस की वजह से वो इस्लाम पर क़ाइम नहीं रहता जैसा कि एक हदीस में है कि हर बच्चा अपनी फ़ितरत (यानी तौहीद) पर पैदा होता है फिर मां बाप उसको यहूदी या नसरानी बना देते हैं। (मुस्लिम)

اَمۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوۡا بِهٖ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۳۵﴾ وَ اِذَاۤ اَذَقۡنَا النَّاسَ رَحۡمَةً فَرِحُوۡا بِهَا ؕ وَ اِنۡ
تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ اِذَا هُمۡ يَقۡنَطُوۡنَ ﴿۳۶﴾ اَوَ لَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَ
يَقۡدِرُ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۷﴾ فَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَ الۡمِسۡكِيۡنَ وَ ابۡنَ السَّبِيۡلِ ؕ ذٰلِكَ خَيۡرٌ
لِّلَّذِيۡنَ يُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ ۙ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۳۸﴾ وَ مَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ رِّبًا لِّيَرۡبُوَا۠ فِىۡۤ اَمۡوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرۡبُوۡا
عِنۡدَ اللّٰهِ ۚ وَ مَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ زَكٰوةٍ تُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُضۡعِفُوۡنَ ﴿۳۹﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ
رَزَقَكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡكُمۡ ؕ هَلۡ مِنۡ شُرَكَآئِكُمۡ مَّنۡ يَّفۡعَلُ مِنۡ ذٰلِكُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى
عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 35 से 40

(और ये लोग जो शिर्क करते हैं तो उनसे कोई पूछे कि इसकी क्या वजह है) **क्या हम ने उन पर कोई सनद** (यानी कोई किताब) **उतारी है कि वो उन को अल्लाह के साथ शिर्क करने को कह रही है(35) और जब हम** (इन) **लोगों को कुछ महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वो उससे** (इस तरह) **खुश होते हैं** (कि खुशी में मस्त होकर शिर्क करने लगते हैं जैसा ऊपर ज़िक्र आया), **और अगर उनके** (बुरे) **कामों के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं उन पर कोई मुसीबत आती है तो बस वो लोग नाउम्मीद हो जाते हैं(36) क्या वो यह नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी दे देता है और जिसको चाहे कम देता** (है इस बात को मुशरिक भी मानते हैं कि रोज़ी का घटाना बढ़ाना असल में अल्लाह ही काम) **है, इस** (बात) **में** (भी तौहीद की) **निशानियां हैं उन लोगों लिए जो ईमान रखते हैं** (यानी वो समझते हैं और दूसरे भी समझ सकते हैं कि जो ऐसा कुदरत वाला होगा वो ही इबादत का हक़दार होगा)(37) **बस** (जब रोज़ी देने वाला अल्लाह है तो कंजूसी न करो बल्कि) **रिश्तेदार को उसका हक़ दिया करो और** (इसी तरह) **ग़रीब और मुसाफ़िर को भी** (उनके हक़ दिया करो जिसके बारे में शरीअत की किताबों से पता कर सकते हो), **यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह को राज़ी करना चाहते हैं, और ऐसे ही लोग कामयाब होने वाले हैं(38) और जो चीज़ तुम** (इस नीयत से किसी को) **दोगे कि वो लोगों के माल में** (शामिल होकर यानी उनके क़ब्ज़े में) **पहुंच कर** (तुम्हारे लिए) **ज़्यादा हो** (कर आ) **जाए** (जैसा शादियों में अक्सर इसी नीयत से तोहफ़े दिये जाते हैं) **तो यह अल्लाह के**

नज़दीक नहीं बढ़ता (क्योंकि अल्लाह के नज़दीक वो ही माल क़ुबूल होता और बढ़ता है जो अल्लाह को राज़ी करने के लिए ख़र्च किया जाए) **और जो ज़कात** (वग़ैरह) **दोगे जिससे अल्लाह को राज़ी करना चाहते हो तो ऐसे लोग** (अपने दिये हुए को) **अल्लाह के पास बढ़ाते रहेंगे**(39) **अल्लाह वो ही है जिसने तुम को पैदा किया फिर तुम को रोज़ी दी फिर तुम को मौत देता है फिर** (क़ियामत में) **तुम को ज़िन्दा करेगा,** (बस वो तो ऐसा क़ुदरत वाला है अब यह बताओ कि) **तुम जिन्हें अल्लाह का शरीक मानते हो उनमें भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके,** (और खुली बात है कि कोई भी नहीं, इसलिए साबित हुआ कि) **वो इनके शिर्क से पाक और बहुत ऊपर है** (यानी उसका कोई साझी नहीं)**(40)**

नोटः- हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि रिश्तेदारों का हक़ उस आदमी के लिए जो माल रखता है यह है कि माल से उनकी मदद करे और जिसके पास माल न हो वो बदन से ख़िदमत करे और ज़बानी हमदर्दी करे। (क़ुरतबी)

मसअलाः- तोहफ़ा देने वाले को इस पर नज़र रखना कि उसका बदला मिलेगा यह बहुत बुरी बात है जिसको ऊपर आयत में मना किया गया है। लेकिन अपनी ख़ुशी से अपने तोहफ़ा देने वाले को अपना मौक़ा होने पर ख़ुद भी कोई तोहफ़ा दे देना अच्छा है जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते शरीफ़ा भी ये ही थी कि जो आदमी आप को कोई तोहफ़ा देता तो अपने मौक़े पर आप भी उस को तोहफ़ा देते। हां मगर उसकी सूरत ऐसी न बनाए कि तोहफ़ा देने वाला उसको बदला समझे।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾
قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 41 से 45

(शिर्क और गुनाह ऐसी बुरी चीज़ है कि) **ज़मीन और दरिया** (यानी सारी दुनिया) **में लोगों के** (बुरे) **कामों की वजह से मुसीबतें आ रही हैं** (जैसे सूखा पड़ना तूफ़ान आना और वबाई बीमारियां)

ताकि अल्लाह तआ़ला उनके कुछ कामों (की सज़ा) **का मज़ा उन को चखा दे ताकि वो** (अपने उन कामों से) **बाज़ आजाएं(41)** (अगर मुशरिक लोगों को इसे मानने में झिजक हो तो) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि मुल्क में चलो फिरो फिर देखो कि जो** (काफ़िर व मुशरिक) **लोग पहले हो चुके हैं उन का अन्जाम कैसा हुआ, उनमें अक्सर मुशरिक ही थे** (सो देख लो वो आसमानी अज़ाब से किस तरह हलाक हुए जिससे साबित हुआ कि शिर्क का बड़ा वबाल है)**(42) सो** (बस) **तुम अपना मुंह इस सच्चे दीन** (यानी इस्लाम) **की तरफ़ रक्खो इससे पहले कि ऐसा दिन आए जिसको फिर अल्लाह की तरफ़ से हटना न होगा** (यानी जैसे दुनिया में ख़ास अज़ाब के वक़्त को अल्लाह तआ़ला क़ियामत के वादे पर हटाता जाता है जब वो आने वाला दिन आजाएगा फिर उसको न हटाएगा और) **उस दिन** (यह होगा कि) **सब** (अच्छे बुरे काम करने वाले) **लोग** (अन्जाम के हिसाब से) **अलग-अलग हो जाएंगे(43)** (इस तरह कि) **जो आदमी कुफ़्र कर रहा है उस पर तो उस का कुफ़्र** (का वबाल) **पड़ेगा और जो नेक काम कर रहा है सो ये लोग अपने** (नफ़े के) **लिए सामान कर रहे हैं(44) जिस का नतीजा यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अपनी महरबानी से** (नेक) **बदला देगा जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये,** (और काफ़िर लोग नाकाम रहेंगे जिसकी वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को पसन्द नहीं करता** (बल्कि उनके कुफ़्र पर उन से नाराज़ है)**(45)**

नोटः- हज़रत थानवी रह० कहते हैं कि जिस मुसीबत के साथ इन्सान को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान अपने गुनाहों पर पछतावा और तौबा व इस्तिग़फ़ार की तरफ़ लगाव ज़्यादा हो जाए वो निशानी इसकी है कि यह क़हर नहीं बल्कि महरबानी है और जिसको यह सूरत न बने बल्कि घबराहट व बेचैनी और गुनाहों की तरफ़ ध्यान और ज़्यादा बढ़ जाए वो निशानी क़हरे इलाही और अज़ाब की है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّ لِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ
الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَ كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي
السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ

إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝٤٨ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلِ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ۝٤٩ فَانظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ
اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٥٠ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا
فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝٥١ فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا
مُدْبِرِينَ ۝٥٢ وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝٥٣

आयत नं० 46 से 53

और अल्लाह तआला की (कुदरत व नेमत और उसके एक होने की) **निशानियों में से एक यह** (भी) **है कि वो** (बारिश से पहले) **हवाओं को भेजता है कि वो** (बारिश की) **ख़ुशख़बरी देती हैं और ताकि तुम को अपनी** (इस) **रहमत** (बारिश) **का मज़ा चखा दे** (यानी बारिश के फ़ाइदे पहुंचाए) **और** (इस वास्ते हवा भेजता है) **ताकि** (उस हवा से चलने वाली) **कशतियां उन के हुक्म से** (पानी में) **चलें और ताकि** (इस तरह दरिया के सफ़र से) **तुम उस की रोज़ी को तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो(46) और हम ने आप से पहले बहुत से पैग़म्बर उन की क़ौमों के पास भेजे और वो उनके पास** (हक़ की खुली-खुली) **दलीलें लेकर आए** (जिस पर कुछ ईमान लाए और कुछ न लाए) **सो हम ने उन लोगों से बदला लिया जो मुजरिम थे, और ईमान वालों की मदद करना हमारे ज़िम्मे था** (वो बदला अल्लाह का अज़ाब था और उसमें काफ़िरों का हलाक होना या उन का हार जाना और मुसलमानों का बच जाना और उनका जीत जाना है)**(47) अल्लाह ऐसा** (कुदरत वाला) **है कि वो हवाएं भेजता है फिर वो** (हवाएं) **बादलों को उठाती हैं फिर अल्लाह तआला उस** (बादल) **को** (कभी तो) **जिस तरह चाहता है आसमान में** (यानी ऊपर) **फैला देता है और** (कभी) **उस को टुकड़े-टुकड़े कर** (के घटा बना) **देता है फिर तुम बारिश को देखते हो कि उस** (बादल) **के अन्दर से बरसती है फिर जब वो** (बारिश) **अपने बन्दों में से जिसको चाहे पहुंचा देता है तो बस वो ख़ुशी मनाने लगते हैं(48) और वो लोग इस** (बारिश के बरसने) **से पहले** (बिल्कुल ही) **ना उम्मीद** (हो रहे) **थे** (यानी अभी-अभी ना उम्मीद थे और अभी ख़ुश हो गये जैसा कि देखा भी जाता है)**(49) सो** (ज़रा) **अल्लाह की रहमत** (यानी बारिश) **के आसार** (तो) **देखो कि अल्लाह तआला** (इसके वास्ते से) **ज़मीन को उसके मुर्दा होने** (यानी सूख जाने) **के बाद किस तरह ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **करता है,** (तो जिस ख़ुदा ने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया) **कुछ शक नहीं कि वो ही** (अल्लाह) **मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वो हर चीज़ पर कुदरत**

रखने वाला है(50) **और अगर हम उन पर और** (क़िस्म की) **हवा चलाएं फिर** (उस हवा से) **ये लोग खेती को** (सूखी और) **पीली देखें** (कि उसकी हरियाली जाती रही) **तो ये उसके बाद नाशुक्री करने लगें** (और पहली सब नेमतों को भूल जाएं)(51) **सो** (जब उनकी बेपरवाई और नाशुक्री इस दर्जा की है तो इससे यह भी साबित हुआ कि ये बिल्कुल ही बेहिस हैं तो उनके ईमान न लाने पर ग़म करना बेकार है, क्योंकि) **आप मुर्दों को** (तो) **नहीं सुना सकते और बहरों को** (भी) **आवाज़ नहीं सुना सकते** (ख़ास कर) **जब कि पीठ फेर कर चल दें** (कि इशारे को भी न देखें)(52) **और** (इसी तरह) **आप** (ऐसे) **अन्धों को** (जो कहना न मानें) **उनकी बे राही से राह पर नहीं ला सकते, आप तो बस उनको सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं** (और) **फिर वो मानते** (भी) **हैं** (और जब ये लोग मुर्दों, बहरों अन्धों के जैसे हैं फिर इन से ईमान की उम्मीद न रखिए और ग़म न कीजिए)(53)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि मोमिनों की मदद करना अल्लाह तआ़ला ने अपनी महरबानी से अपने ज़िम्मे ले लिया है और कभी कहीं हार हो जाती है तो हमारी ही कमी की वजह से होता है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَ هُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿۵۴﴾ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ۬ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا یُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ الْاِیْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰی یَوْمِ الْبَعْثِ ۫ فَهٰذَا یَوْمُ الْبَعْثِ وَ لٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَیَوْمَىٕذٍ لَّا یَنْفَعُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَ لَا هُمْ یُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ لَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ لَىٕنْ جِئْتَهُمْ بِاٰیَةٍ لَّیَقُوْلَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۹﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لَا یَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِیْنَ لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿۶۰﴾

आयत नं० 54 से 60

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम को कमज़ोरी की हालत में बनाया (इससे मुराद शुरू की बचपन की हालत है) **फिर** (उस) **कमज़ोरी के बाद ताक़त** (यानी जवानी) **दी फिर** (उस) **ताक़त के**

बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा किया, (और) **वो जो चाहता है पैदा करता है, और वो सब कुछ जानने वाला** (और सब कुछ करने की) **क़ुदरत** (रखने) **वाला** (है बस जो ऐसा क़ुदरत वाला हो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल) **है(54) और जिस दिन क़ियामत होगी मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग** (वहां की परीशानी से घबराकर) **क़सम खालेंगे कि** (क़ियामत बहुत जल्दी आगई और) **वो** (यानी हम) **लोग** (बरज़ख़ में) **एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे** (यानी क़ियामत अपने तय वक़्त से पहले ही आगई)**, इसी तरह ये लोग** (दुनिया में) **उल्टे चला करते** (थे यानी इसी तरह दुनिया में क़ियामत के आने का इनकार करते थे और न आने की क़समें खाया करते) **थे(55) और जिन लोगों को ईमान और इल्म मिला है** (यानी ईमान वाले कि उनको शरीअत की ख़बरों का इल्म है) **वो** (इन मुजरिमों के जवाब में) **कहेंगे कि** (तुम्हारा कहना ग़लत है बल्कि) **तुम अल्लाह तआ़ला की लिखी तक़दीर के मुवाफ़िक़ क़ियामत के दिन तक** (बरज़ख़ में) **रहे सो क़ियामत का दिन ये ही है लेकिन** (क़ियामत को वक़्त से पहले आया हुआ समझने की वजह यह है कि) **तुम** (दुनिया में क़ियामत के आने का) **यक़ीन** (और ऐतक़ाद) **नहीं करते** (थे बल्कि झुटलाते और इनकार किया करते) **थे(56) बस उस दिन ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **को उन का** (किसी क़िस्म की झूटी सच्ची) **मजबूरी बताना नफ़ा न देगा और न उन से अल्लाह की नाराज़ी दूर करने को कहा जाएगा** (यानी इसका मौक़ा न दिया जाएगा कि तौबा करके अल्लाह को राज़ी करलें)**(57) और हम ने लोगों** (की नसीहत) **के वास्ते इस क़ुरआन में हर तरह की अच्छी-अच्छी** (और ज़रूरी) **बातें बयान की हैं** (मगर काफ़िरों ने हटधर्मी से इसको न क़ुबूल किया और न इससे नफ़ा उठाया)**, और** (काफ़िरों की हटधर्मी इतनी बढ़ गई है कि) **अगर** (क़ुरआन के सिवा उन मोजिज़ों में से जिनको ये ख़ुद मांगा करते हैं) **आप उनके पास कोई निशानी ले आएं तब भी ये लोग जो काफ़िर हैं ये ही कहेंगे कि तुम सब** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सब मुसलमान) **झूटे हो(58)** (और इन लोगों की हटधर्मी की वजह यह है कि) **जो लोग** (सच्चे दीन की निशानियां देखने के बावजूद) **यक़ीन नहीं करते** (और न इसके हासिल करने की कोशिश करते) **अल्लाह तआ़ला उनके दिलों पर बन्द लगा देते हैं** (जिससे रोज़ाना समझ कम होती जाती है)**(59) सो** (जब ये ऐसे हटधर्म हैं तो इनके सताने पर) **आप सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा** (कि आख़ीर में ये नाकाम और मुसलमान कामयाब होंगे) **सच्चा है** (वो वादा ज़रूर पूरा होगा बस थोड़े ही दिन सब्र करना है) **और ये यक़ीन न करने वाले लोग आप को बेसहार न करने पाएं** (यानी उन की तरफ़ से चाहे कैसी ही बात पेश आए मगर ऐसा न हो कि आप सब्र और सहार न करें)**(60)**

बरज़ख़ः- 'बरज़ख़' वो जगह है जहां मौत से क़ियामत तक रहना है इसको आलमे क़ब्र भी कहते हैं।

नोटः- क़ियामत में मौक़े के हिसाब से हालात अलग-अलग होंगे एक मौक़ा वो होगा जब बोल ही न सकेंगे। एक मौक़ा वो होगा जब झूट बोलने की हिम्मत न होगी और एक मौक़ा वो होगा जब आज़ादी होगी कि जो चाहे बयान दे। झूट बोले या सच। जब इन्सान झूट बोलेगा तो उसके मुंह पर बन्द लगा कर उसके हाथ पांव से गवाही ली जाएगी। और वो सचमुच सारा क़िस्सा बयान कर देंगे। जिस पर फ़ैसला हो जाएगा।

31-सूरत-लुक़्मान

इस मक्की सूरत में '4' रूकू और '34' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝٢ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۝٣ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ
لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦ وَ اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْۤ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٨ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝١٠ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝١١ ع

आयत नं० 01 से 11

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **ये आयतें हैं एक हिकमत वाली किताब** (यानी कुरआन) **की(02) जो कि हिदायत और रहमत** (का सामान) **है** (उन) **नेक लोगों के लिए(03) जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वो लोग आख़रत का पूरा यक़ीन रखते हैं(04)** (सो) **ये लोग** (इस कुरआन पर ऐतक़ाद और अमल की वजह से) **अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और ये ही लोग** (सीधे रास्ते पर चलने की वजह से) **कामयाब होने वाले हैं(05) और कुछ लोग ऐसे** (भी) **हैं जो** (कुरआन से मुंह मोड़ कर) **उन बातों के ख़रीदार बनते** (हैं यानी ऐसी बातें अपनाते) **हैं जो** (अल्लाह की याद से) **भूल में डालने वाली हैं** (जैसे नाच गाने खेल तमाशे) **ताकि** (उससे दूसरों को भी) **अल्लाह की राह** (यानी सच्चे दीन से) **बे समझे बूझे गुमराह करें और** (गुमराह करने के साथ) **उस** (राहे हक़्) **की हंसी उड़ाएं** (ताकि

दूसरों के दिल से भी उसकी इज़्ज़त और असर निकल जाए, और) **ऐसे लोगों के लिए** (आख़रत में) **रूसवा करने वाला अज़ाब** (होने वाला) **है(06) और** (ऐसे आदमी की बेपरवाई की यह हालत है कि) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वो आदमी घमन्ड करता हुआ** (ऐसे) **मुंह मोड़ लेता है जैसे उसने सुना ही नहीं जैसे उसके कानों में बहरापन है सो उस** (आदमी) **को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए(07)** (और) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन के लिए** (ऐसी) **ऐश की जन्नतें हैं(08) जिनमें वो सदा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है, और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है कि अपने किये वादे को अपनी क़ुदरत और हिकमत से पूरा कर सकता) **है(09) अल्लाह ने आसमानों को बिना सतून** (व पिलर के) **बनाया** (जैसा कि) **तुम उनको देख रहे हो और ज़मीन में** (भारी-भारी) **पहाड़ रख दिये हैं कि वो** (ज़मीन) **तुम को लेकर डगमगाने न लगे और उस** (ज़मीन) **में हर क़िस्म के जानवर फैला रक्खे हैं, और हमने आसमान से पानी बरसाया फिर उस ज़मीन में हर तरह के अच्छे क़िस्म के** (पेड़ पौधे) **उगाए(10)** (और उन लोगों से जो शिर्क करते हैं कहिए कि) **ये तो अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई चीज़ें हैं** (तो) **अब तुम लोग मुझ को दिखाओ कि उसके सिवा जो** (ख़ुदा ने बना रक्खे) **हैं उन्होंने क्या-क्या चीज़ें पैदा की हैं** (ताकि उन का इबादत का हक़दार होना साबित हो जाए, और यह दलील सुन कर उन्हें रास्ते पर आजाना चाहिए था मगर उन्होंने नहीं माना) **बल्कि ये ज़ालिम लोग** (उसी तरह) **खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं(11)**

नोटः- जिन कामों में न दीन का कोई फ़ाइदा हो और न दुनिया का वो सब बुरे हैं और जिन कामों (खेलों) में दुनिया का फ़ाइदा हो और दीन का नुक़सान न हो वो जाइज़ हैं।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾ وَ وَصَّيْنَا
الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ
الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا
مَعْرُوْفًا ۫ وَّ اتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ
تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ

خَبِيْرٌ ۝١٦ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ
الْاُمُوْرِ ۝١٧ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝١٨ وَ
اقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝١٩

आयत नं० 12 से 19

और हमने लुक़मान को हिकमत (यानी ख़ास समझदारी) **दी** (जिसकी असलीयत इल्म पर अमल करना है और साथ ही यह हुक्म दिया) **कि** (सब नेमतों पर) **अल्लाह तआ़ला का शुक्र करते रहो, और जो आदमी शुक्र करेगा वो अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है** (क्योंकि इससे नेमत में तरक़्क़ी होती है) **और जो नाशुक्री करेगा तो** (अपना ही नुक़सान करेगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **बेपरवाह** (है कि किसी का मुहताज नहीं और सब) **ख़ूबियों वाला है** (कि उसको किसी की सना और तारीफ़ की ज़रूरत नहीं)(12) **और** (उन बातों को याद करो) **जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा अल्लाह के साथ किसी को शरीक मत बनाना, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है**(13) **और** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **हम ने इन्सान को उसके मां बाप के बारे में हुक्म दिया है** (कि उनका कहना माने और ख़िदमत करे क्योंकि उन्होंने उसके लिए बड़ी तकलीफ़ें उठाई हैं ख़ास कर) **उसकी मां ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठा कर उस को पेट में रक्खा** (क्योंकि जैसे-जैसे बच्चा पेट में बढ़ता जाता है मां की कमज़ोरी बढ़ती जाती है) **और** (फिर) **दो साल में उसका दूध छुटता** (है इन दिनों में भी वो हर तरह की देखभाल और ख़िदमत करती है इसी तरह बाप भी अपने हिसाब से मेहनत करता है इसलिए हमने अपने हक़ के साथ मां बाप के हक़ अदा करने का हुक्म दिया) **है कि तू मेरा और अपने मां बाप का शुक्र अदा किया कर** (अल्लाह का शुक्र तो इबादत और ताबेदारी करना है और मां बाप का शुक्र ख़िदमत करना है, क्योंकि) **मेरी ही तरफ़** (सब को) **लौट कर आना** (है उस वक़्त मैं अच्छे बुरे कामों का फल और सज़ा दूंगा इसलिए हुक्म मानना ज़रूरी) **है**(14) **और** (मां बाप का इतना बड़ा हक़ होने के बावजूद तौहीद ऐसी चीज़ है कि) **अगर तुझ पर वो दोनो** (भी) **इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जिस** (के ख़ुदाई में शरीक होने) **की तेरे पास कोई दलील** (और सनद) **न हो** (और खुली बात है कि कोई भी चीज़ ऐसी नहीं, मतलब यह कि शिर्क न करना) **तो तू उनका कहना न मानना और** (हां यह ज़रूरी है कि) **दुनिया** (की ज़रूरतों) **में** (जैसे

उनका ज़रूरी ख़र्च और ख़िदमत) **उनके साथ भलाई से रहो, और** (दीन के बारे में सिर्फ़) **उस** (ही) **आदमी की राह पर चलना जिसने मुझ से लौ लगा रक्खी** (हो यानी मेरे हुक्मों पर चलता) **हो, फिर तुम सब को मेरे पास आना है फिर** (आने के वक़्त) **मैं तुम को जितला दूंगा जो-जो कुछ तुम करते थे**(15) (और लुक़मान ने अपने बेटे को यह भी नसीहत की कि) **बेटा** (अल्लाह तआ़ला का इल्म और क़ुदरत इस दर्जा है कि) **अगर** (किसी का) **कोई काम** (कैसा ही छुपा हो जैसे मान लो कि वो) **राई के दाने के बराबर हो** (और) **फिर** (मान लो कि) **वो किसी पत्थर के अन्दर** (छुपा रक्खा) **हो या वो आसमानों के अन्दर हो या वो ज़मीन के अन्दर हो** (लेकिन अल्लाह तआ़ला की ऐसी शान है कि) **तब भी** (क़ियामत के दिन हिसाब के वक़्त) **उस को अल्लाह तआ़ला हाज़िर कर देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला छुपी हुई चीज़ों का जानने वाला** (और) **ख़बरदार है**(16) (और नेक कामों के बारे में यह नसीहत की, कि) **बेटा नमाज़ पढ़ा करो** (कि ईमान के बाद ऊंचे दर्जे का नेक काम है) **और** (लोगों को भी) **अच्छे कामों की नसीहत किया करो और बुरे कामों से मना किया करो और** (इन कामों में) **तुम पर जो मुसीबत आए उस पर सब्र किया करो, यह** (सब्र करना) **हिम्मत के कामों में से है**(17) (और अख़लाक़ व आदतों के बारे में यह नसीहत की, कि बेटा) **लोगों से** (घमन्ड करते हुए) **अपना मुंह मत फेरो और ज़मीन पर इतरा कर मत चलो, बेशक अल्लाह तआ़ला किसी घमन्ड करने वाले शैख़ी बाज़ को पसन्द नहीं करते**(18) **और अपनी रफ़्तार में बीच की चाल रक्खो** (न बहुत दौड़ कर चलो और न बहुत आहिस्ता गिन-गिन कर क़दम रखना कि यह घमन्डियों का तरीक़ा है) **और** (बोलने में) **अपनी आवाज़ को धीमी रक्खो** (यानी बहुत ऊंची आवाज़ न हो न इतनी धीमी कि दूसरे भी न सुन सकें)**, बेशक आवाज़ों में सब से बुरी आवाज़ गधों की आवाज़** (होती है तो आदमी होकर गधों की तरह चीख़ना और चिल्लाना क्या ठीक है और चीख़ने चिल्लाने से अक्सर दूसरों को तकलीफ़ भी) **होती है**(19)

नोटः- हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि आप को यह रूतबा कैसे मिला कि लोग आप की इज़्ज़त करते हैं आप ने फ़रमाया कि ''हमेशा सच बोलना, बेकार बातों से परहेज़ करना, हलाल रोज़ी पर तसल्ली रखना, अपनी नज़र को नीची रखना, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना, एहद को पूरा करना, महमान का इकराम करना और पड़ौसी की हिफ़ाज़त करना''।

(इब्ने कसीर)

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ
النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًی وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ۝۲۰ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ۝۲۱ وَ مَنْ یُّسْلِمْ
وَجْهَهٗۤ اِلَی اللّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ؕ وَ اِلَی اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝۲۲ وَ مَنْ كَفَرَ فَلَا
یَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَیْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۲۳ نُمَتِّعُهُمْ قَلِیْلًا ثُمَّ
نَضْطَرُّهُمْ اِلٰی عَذَابٍ غَلِیْظٍ ۝۲۴ وَ لَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۲۵

आयत नं० 20 से 25

क्या तुम लोगों ने यह नहीं देखा (यानी नहीं जाना) **कि अल्लाह तआ़ला ने सब चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है जो कुछ आसमानों में** (मौजूद) **हैं और जो कुछ ज़मीन में** (मौजूद) **हैं** (चाहे बिना वास्ता काम आती हों या वास्ते से) **और उसने तुम पर अपनी नेमतें खुली और छुपी पूरी कर रक्खी हैं** (खुली वो कि आंख कान से मालूम हों और छुपी वो कि जो अक़्ल से समझी जाएं), **और** (इसके बावजूद कि इस दलील से अल्लाह का एक होना साबित होता है मगर) **कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में** (यानी उसकी तौहीद में) **बिना जानकारी** (यानी ज़रूरी इल्म) **और बिना दलील और बिना किसी रौशन किताब के झगड़ा** (यानी बहसें किया) **करते हैं(20) और जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ पर चलो जो अल्लाह तआ़ला ने उतारी है** (यानी हक़ को साबित करने वाली दलीलों को सोच कर उन पर चलो) **तो जवाब में कहते हैं कि** (हम उस पर) **नहीं** (चलते) **हम** (तो) **उसी पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने बड़ों को पाया है,** (आगे उन की बात का जवाब है कि) **क्या अगर शैतान उन के बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़** (यानी गुमराही की तरफ़ जिस का अन्जाम दोज़ख़ का अज़ाब है) **बुलाता रहा हो तब भी** (उन्हीं के तरीक़े पर चलेंगे)(21) **और जो आदमी** (सच्चे दीन पर चलकर) **अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुकादे** (यानी मुसलमान हो जाए) **और** (इसके साथ) **वो** (सच्चा और) **मुख़लिस भी** (हो यानी सिर्फ़ दिखावे का इस्लाम न) **हो तो उसने बड़ा मज़बूत कड़ा थाम लिया** (यानी वो उस आदमी जैसा हो गया जो किसी मज़बूत रस्सी का कड़ा हाथ में थाम कर गिरने से बचा रहता है इसी तरह यह आदमी भी नुक़सान से बच गया), **और सब कामों का आख़री अन्जाम अल्लाह ही**

की तरफ़ पहुंचेगा (बस ये काम यानी अच्छे या बुरे रास्ते पर चलना भी उसके सामने पेश होंगे बस वो हर एक को ठीक फल व सज़ा देगा)(22) **और जो आदमी** (हक़ को साबित करने वाली दलीलों के बावजूद) **कुफ़्र करे तो आप उसके कुफ़्र का ग़म न करें, उन सब को हमारे ही पास लौटना है तो हम उन सब को बता देंगे जो कुछ वो** (दुनिया में) **किया करते थे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआला को** (तो) **दिलों की बातें** (तक) **ख़ूब मालूम हैं** (तो खुले कामों की तो बात ही क्या)(23) **हम उन्हें कुछ दिनों का ऐश दिये हुए हैं फिर उनको धीरे-धीरे एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले आएंगे**(24) **और अगर आप उन से पूछें कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ज़रूर ये ही जवाब देंगे कि अल्लाह ने,** (इस पर) **आप कहिए कि अलहम्दु लिल्लाह** (बस जो पैदा करने वाला है वो ही इबादत का हक़दार है मगर ये लोग फिर भी नहीं मानते)**, बल्कि इन में अक्सर लोग समझ से काम नहीं लेते**(25)

नोटः- सब चीज़ों को इन्सान के काम में लगाने का मतलब यह है कि सभी चीज़ें किसी न किसी सूरत में इन्सान के काम आती हैं चाहे बिना वास्ते के (जिन्हें हम जानते हैं)या किसी वास्ते से (जिन्हें हम नहीं जानते) ।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۲۶ وَ لَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرُ
يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۲۷ مَا خَلْقُكُمْ وَ لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا
كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝۲۸ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؗ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝۲۹ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝۳۰ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝۳۱ وَ اِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا
اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝۳۲

आयत नं० 26 से 32

(और अल्लाह की वो शान है कि) **जो कुछ आसमान व ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का** (है यानी वो ही मालिक) **है, और बेशक अल्लाह तआला** (ख़ुद अपनी ज़ात में भी)

बेनियाज़ (है कि किसी का मुहताज नहीं और) **सब ख़ूबियों वाला** (है बस इबादत का हक़दार वो ही) **है**(26) **और** (उसकी ख़ूबियां इतनी ज़्यादा हैं कि) **जितने पेड़ ज़मीन भर में हैं अगर वो सब क़लम बन जाएं** (यानी उन को काट-काट कर क़लम बना लिये जाएं और इस तरह एक-एक पेड़ से हज़ारों क़लम बन जाएंगे) **और यह जो समन्दर है इसके सिवा सात समन्दर** (रोशनाई की जगह) **इसमें और शामिल हो जाएं** (और फिर उन क़लमों और रोशनाई से अल्लाह तआ़ला की ख़ूबियां लिखनी शुरू करें) **तो** (सब क़लम रोशनाई ख़त्म हो जाए और) **अल्लाह** (की ख़ूबियों) **की बातें ख़त्म न हों, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है**(27) (और वो ऐसा क़ुदरत वाला है कि) **तुम सब का** (पहली बार) **पैदा करना और** (दूसरी बार) **ज़िन्दा करना** (उसके नज़दीक) **बस ऐसा है जैसा एक आदमी का** (पैदा करना और ज़िन्दा करना), **बेशक अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनता और सब कुछ देखता है** (बस जो लोग इन दलीलों के बावजूद क़ियामत का इनकार और गुनाह कर रहे हैं उन सब को देख रहा है उनको सज़ा देगा)(28) **ऐ लोगो क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में और दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में मिला देता है और उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है कि हर एक ठहराए वक़्त** (क़ियामत) **तक चलता रहेगा और** (क्या तुझ को) **यह** (मालूम नहीं) **कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है**(29) **यह सब कुछ इसलिए है कि अल्लाह ही का वजूद सच्चा है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं वो बिल्कुल ही बेबुनियाद हैं और अल्लाह ही ऊंची शान वाला और** (सब से) **बड़ा है**(30) **क्या** (लोगों) **तुम्हें** (तौहीद की) **यह** (दलील) **मालूम नहीं कि अल्लाह ही की महरबानी से कशती दरिया में चलती है ताकि तुम को अपनी** (क़ुदरत की) **निशानियां दिखा दे** (जैसा कि हर चीज़ अपने पैदा करने वाले के वजूद की दलील है), **बेशक इसमें** (भी क़ुदरत की) **निशानियां हैं हर ऐसे आदमी के लिए जो सब्र करने वाला शुक्र करने वाला हो** (यानी मोमिन कि पूरा सब्र करने वाला शुक्र करने वाला वो ही होता है)(31) **और जब उन लोगों को** (दरिया की) **लहरें सायबानों** (यानी बादलों) **की तरह** (चारों तरफ़ से) **घेर लेती हैं तो ख़ालिस ऐतक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, फिर जब उन को बचा कर** (सूखी) **ज़मीन की तरफ़ ले आता है तो कुछ तो उनमें सीधे रास्ते पर रहते** (हैं कि शिर्क को छोड़ कर तौहीद अपना लेते) **हैं, और** (कुछ फिर हमारी आयतों का इनकार करने लगते हैं और) **हमारी आयतों का बस वो ही लोग इनकार करते हैं जो वादा तोड़ने वाले और नाशुक्रे हैं** (कि कशती में जो अल्लाह के एक मानने का वादा किया था उसको तोड़

दिया और सूखे में आकर जो शुक्र करना था उस को छोड़ दिया)(32)

नोटः- सारी दुनिया के लोगों को जितना इल्म दिया गया है वो सब मिला कर भी अल्लाह तआला के इल्म के सामने बहुत थोड़ा है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٙ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ
يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ
تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۳۴﴾

आयत नं० 33 से 34

ऐ लोगो अपने रब (की नाराज़ी) **से डरो** (और कुफ़्र शिर्क छोड़ दो) **और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपने बेटे के कुछ काम आएगा और न कोई बेटा ही अपने बाप के कुछ काम आएगा,** (और यह दिन ज़रूर आने वाला है क्योंकि इसके बारे में अल्लाह का वादा है और) **बेशक अल्लाह का वादा सच्चा** (होता) **है बस तुम को दुनिया की ज़िन्दगानी धोके में न डाले** (कि इसमें लग कर उस दिन को भूल जाओ) **और न तुम को वो धोकेबाज़** (यानी शैतान) **अल्लाह से धोके में डाले** (कि तुम उसके बहकाने में आ जाओ कि अल्लाह तुम को अज़ाब न देगा)(33) **बेशक अल्लाह ही को क़ियामत की** (घड़ी की) **ख़बर है और वो ही** (अपने इल्म के मुवाफ़िक़) **बारिश बरसाता है और वो ही जानता है जो कुछ** (लड़की या लड़का) **मां के पेट में है, और कोई आदमी नहीं जानता कि वो कल क्या काम करेगा** (इसकी भी उसी को ख़बर है), **और कोई आदमी नहीं जानता कि वो किस ज़मीन में मरेगा** (इसकी भी उसी को ख़बर है और इन्हीं चीज़ों की क्या ख़ास बात है जितनी ग़ैब की चीज़ें हैं) **बेशक अल्लाह** (ही इन) **सब बातों का जानने वाला** (और इन की) **ख़बर रखने वाला** (है कोई दूसरा इसमें शरीक नहीं) **है**(34)

नोटः- बाप और बेटे का एक दूसरे को क़ियामत में नफ़ा न पहुंचाने का जो बयान ऊपर आयत में आया है वो उस सूरत में है जब कि दोनों में से एक काफ़िर हो कि मोमिन किसी काफ़िर के कुछ काम नहीं आ सकता चाहे कितना ही नज़दीकी रिश्तेदार हो लेकिन एक मोमिन का दूसरे मोमिन के लिए सिफ़ारिश करना और सिफ़ारिश का कुबूल होना दूसरी आयतों और हदीसों से साबित है।

32-सूरत-सजदा

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '30' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۚ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۗ﴿٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ
قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ
مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۚ﴿٧﴾ ثُمَّ
جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾

आयत नं० 01 से 09

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह** (अल्लाह की) **उतारी हुई किताब है** (और) **इसमें कुछ शक नहीं** (कि) **यह सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **की तरफ़ से** (है जैसा कि इस किताब का मोजिज़ा होना खुद इसकी दलील) **है(02) क्या ये** (इनकार करने वाले) **लोग यह कहते हैं कि पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने यह अपने दिल से बना लिया** (है यह कहना ग़लत और झूट) **है** (यह बनाया हुआ नहीं) **बल्कि यह सच्ची किताब है** (जो) **आप के रब की तरफ़ से** (आई है) **ताकि आप** (इससे) **ऐसे लोगों को** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराएं जिनके पास आप से पहले कोई डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **नहीं आया था ताकि वो लोग सही रास्ते पर आजाएं(03) अल्लाह ही है जिसने आसमान और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उन दोनों के बीच में** (मौजूद) **हैं छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श पर** (जो शाही कुर्सी जैसा है इस तरह) **क़ाइम हुआ** (और जलवा किया जो उसकी शान के लाइक़ है, वो ऐसा बड़ा

है कि) **बिना उस** (की मर्ज़ी व इजाज़त) **के न तुम्हारा कोई मददगार है और न सिफ़ारिश करने वाला** (हां इजाज़त से सिफ़ारिश हो जाएगी)**, सो क्या तुम समझते नहीं हो** (कि ऐसी हस्ती का कोई साझी नहीं हो सकता)**(04) वो** (ऐसा है कि) **आसमान से लेकर ज़मीन तक** (जितने काम हैं) **हर काम का** (वो ही) **इन्तिज़ाम करता है फिर हर काम उसी के सामने पहुंच जाएगा एक ऐसे दिन में जिसकी मुद्दत तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल होगी** (यानी क़ियामत में सब उसी के सामने पेश होंगे)**(05) वो ही है जानने वाला छुपी और खुली चीज़ों का ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **रहमत वाला(06) जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई** (यानी जिस काम के लिए उस को बनाया उसके लिए ठीक बनाया) **और इन्सान** (यानी आदम अलैहिस्सलाम) **की पैदाइश मिट्टी से शुरू की(07) फिर** (देखो कि वो इन्सान जो सारी मख़्लूक़ से बरतर है) **उसकी नस्ल को निचोड़े हुए कमतर पानी** (यानी मनी) **से बनाया(08) फिर** (मां के पेट में) **उसके बदन के हिस्सों को ठीक किया और उसमें अपनी** (तरफ़ से) **रूह फूंकी और** (पैदा करने के बाद इन्सानों) **तुम को कान और आंखें और दिल दिये,** (इसलिए चाहिए तो यह था कि इन नेमतों पर जो उसकी क़ुदरत की दलील हैं अल्लाह का शुक्र करते और तौहीद पर ईमान रखते मगर) **तुम लोग बहुत कम शुक्र करते** (हो यानी नहीं करते) **हो(09)।**

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝۱۰ قُلْ یَتَوَفّٰىكُمْ
مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝۱۱ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝۱۲ وَ لَوْ شِئْنَا لَاٰتَیْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَ
لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّیْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ۝۱۳ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِیْتُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ
اِنَّا نَسِیْنٰكُمْ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۱۴ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا
سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۩ ۝۱۵ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ
طَمَعًا ؗ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝۱۶ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
یَعْمَلُوْنَ ۝۱۷ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا یَسْتَوٗنَ ۝۱۸ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ
جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝۱۹ وَ اَمَّا الَّذِیْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ یَّخْرُجُوْا
مِنْهَاۤ اُعِیْدُوْا فِیْهَا وَ قِیْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝۲۰ وَ لَنُذِیْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ

الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا
مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع

आयत नं० 10 से 22

और ये (काफ़िर) **लोग कहते हैं कि हम जब ज़मीन में** (मिल जुल कर) **मिट्टी हो गये तो क्या हम फिर** (क़ियामत में) **नये जन्म में आएंगे,** (और इनको इस बात पर सिर्फ़ अचम्भा ही नहीं) **बल्कि** (असलीयत में) **वो लोग अपने रब से मिलने का ही इनकार करते हैं(10) आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि तुम्हारी जान मौत का फ़रिशता निकालता है जो तुम पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **तैनात है फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटा कर लाए जाओगे(11) और** (इस लौटने के वक़्त) **अगर आप** (उन लोगों का) **हाल देखें** (तो अजब हाल देखें) **जब कि ये मुजरिम लोग** (शर्म के मारे) **अपने रब के सामने सर झुकाए** (खड़े) **होंगे,** (और कहते होंगे) **कि या रब हमारे बस** (अब) **हमारी आंखें और कान खुल गये** (और पता चल गया कि पैग़म्बरों ने जो कुछ कहा था सब सच था) **सो हम को** (दुनिया में) **फिर भेज दीजिए हम** (अब के जाकर ख़ूब) **नेक काम किया करेंगे** (अब) **हम को पूरा यक़ीन आगया(12) और** (यह कहना उन का बेकार होगा इसलिए कि) **अगर हम यह चाहते** (कि ज़रूर ही ये राह पर आएं) **तो हम हर आदमी को उस** (की बख़्शिश) **की राह पर ले आते लेकिन मेरी** (तो) **यह** (नसीबी) **बात** (बहुत सी वजहों से) **तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इन्सानों दोनों** (में जो काफ़िर होंगे उन) **से ज़रूर भरूंगा** (और वजह इसकी सूरत हूद की तफ़सीर में बयान हो चुकी है)**(13) तो** (उन से कहा जाएगा कि) **अब उस का मज़ा चक्खो कि तुम अपने इस दिन के आने को भूले रहे** (सो) **हम ने तुम को भुला** (दिया यानी रहमत से दूर कर) **दिया और अपने** (बुरे) **कामों की वजह से सदा के अज़ाब का मज़ा चक्खो(14) बस हमारी आयतों पर तो वो लोग ईमान लाते है कि जब उन को वो आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वो सजदे में गिर जाते हैं** (जिसके बारे में सूरत मरयम में आ चुका है) **और अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ करने लगते हैं और वो लोग** (कलमाए ईमान से) **घमन्ड नहीं करते** (जैसे काफ़िर का हाल आया है कि ईमान की दावत पर घमन्ड से मुंह फेर लेते हैं)**(15) उनके** (नेक कामों का यह हाल है कि उनके) **पहलू** (रात के वक़्त) **अपने बिस्तरों से अलग होते हैं** (चाहे फ़र्ज़ इशा के लिए या तहज्जुद के लिए भी, और इस तरह कि) **वो लोग अपने रब को** (सवाब की) **उम्मीद से और** (अज़ाब के) **डर से पुकारते रहते हैं** (इसमें नमाज़ व दुआ और

ज़िक्र सब आगया), **और हमारी दी हुई चीज़ों में से** (नेकी के कामों में) **ख़र्च करते हैं**(16) **सो किसी आदमी को ख़बर नहीं जो जो आंखों की ठन्डक का सामान ऐसे लोगों के लिए छुपा कर रक्खा गया है यह उन को उन के** (नेक) **कामों का फल मिला है**(17) (और जब दोनो क़िस्म के लोगों का हाल और अन्जाम पता चल गया) **तो** (अब बताओ) **जो आदमी मोमिन हो क्या वो उस आदमी जैसा हो जाएगा जो** (बिल्कुल) **नाफ़रमान** (यानी काफ़िर) **हो,** (नहीं) **वो** (अन्जाम में) **आपस में बराबर नहीं हो सकते**(18) (तो) **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये सो उनके लिए सदा का ठिकाना जन्नतें हैं जो उनके** (नेक) **कामों के बदले उन की महमानी में दिये जाएंगे** (यानी महमान की तरह उनको ये चीज़ें इज़्ज़त के साथ मिलेंगी न कि मांगने वाले भिकारी की तरह बेइज़्ज़ती के साथ)(19) **और जो लोग नाफ़रमान** (काफ़िर) **थे सो उन का ठिकाना दोज़ख़ है, वो लोग जब उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जाएंगे और उनको कहा जाएगा कि दोज़ख़ का वो अज़ाब चक्खो जिस को तुम झुटलाया करते थे**(20) **और** (यह आने वाला अज़ाब तो आख़रत में होगा और) **हम उनको नज़दीक का** (यानी दुनिया में आने वाला) **अज़ाब भी उस बड़े अज़ाब** (यानी आख़रत के अज़ाब) **से पहले चखा देंगे** (जैसे बीमारियां व मुसीबतें) **ताकि ये लोग** (असर लेकर कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (जो फिर भी बाज़ न आए उसके लिए आख़रत का अज़ाब है ही)(21) **और** (ऐसे लोगों पर अज़ाब होने से कुछ अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **उस आदमी से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिस को उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएं फिर वो उनसे मुंह फेरे,** (तो उसके अज़ाब का हक़दार होने में क्या शक है इसलिए) **हम ऐसे मुजरिमों से बदला लेंगे**(22)।

नोटः- इमामे तफ़सीर मुजाहिद रह० ने फ़रमाया कि सारी दुनिया मलकुलमौत के सामने ऐसी है जैसे किसी इन्सान के सामने एक खुली पलेट में दाने पड़े हों वो जिसको चाहे उठाले।

मसअलाः-मलकुल मौत किसी की मौत का वक़्त पहले से नहीं जानता, जब तक कि उसको (हुक्म न दिया जाए कि फलां की रूह क़ब्ज़ कर लो)। (मज़हरी)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ
اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۛ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ
مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ
الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 23 से 30

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को** (आप ही की तरह) **किताब दी थी** (जिसके हुक्म पहुंचाने में उनको तकलीफ़ें सहन करनी पड़ी इसी तरह आप को भी सहन करनी चाहिए एक तसल्ली तो यह हुई फिर इसी तरह आप को भी किताब दी) **सो आप** (अपनी) **इस** (किताब) **के मिलने में कुछ शक न कीजिए** (एक तसल्ली की बात यह हुई) **और हमने उस** (मूसा की किताब) **को बनी इस्राईल के लिए राह दिखाने वाला बनाया था** (इसी तरह आप की किताब से बहुत लोग राह पर आएंगे आप खुश रहिए, एक तसल्ली यह हुई)(23) **और हम ने उन** (बनी इस्राईल) **में बहुत से** (दीन के) **इमाम बना दिये थे जो हमारे हुक्म से नसीहत करते थे जब कि वो लोग** (तकलीफ़ों पर) **सब्र किये रहे, और हमारी आयतों का यक़ीन रखते थे** (यह तसल्ली है मोमिनों को कि तुम लोग सब्र करो तो हम तुम को भी दीन के इमाम बना देंगे)(24) **आप का रब क़ियामत के दिन उन सब के आपस में** (खुला) **फ़ैसला उन बातों में कर देगा जिनमें ये आपस में झगड़ा करते थे** (यानी मोमिन को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में भेज देगा और क़ियामत भी कुछ दूर नहीं)(25) **क्या इन को इस बात से नसीहत नहीं हुई कि हम इनसे पहले** (उनके कुफ़्र व शिर्क की वजह से) **कितनी उम्मतें हलाक कर चुके हैं जिनके रहने की जगहों में ये लोग** (मुल्क शाम के सफ़र में) **आते जाते** (गुज़रते) **हैं, इस** (बात) **में** (तो) **साफ़ निशानियां** (कुफ़्र के नापसन्दीदा होने की मौजूद) **हैं, क्या ये लोग** (उन पहली उम्मतों के क़िस्से) **सुनते नहीं** (हैं कि मशहूर) **हैं**(26) (और इन को जो क़ियामत के आने में शक या इनकार है तो) **क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हम** (बादलों या नहरों के वास्ते से) **सूखी ज़मीन की तरफ़ पानी पहुंचाते हैं फिर उससे खेती पैदा करते हैं जिससे उनके जानवर और वो ख़ुद भी खाते हैं, तो क्या** (इस बात को रात दिन) **देखते नहीं हैं** (यह साफ़ नमूना है मर कर ज़िन्दा होने का)(27) **और ये लोग** (क़ियामत और फ़ैसले का ज़िक्र सुन कर हंसी उड़ाते हुए और जल्दी मचाते हुए यह) **कहते हैं कि अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो तो** (बताओ) **यह फ़ैसला कब होगा**(28) **आप कह दीजिए कि** (तुम बेकार इसका तक़ाज़ा

करते हो तुम्हारे लिए तो वो पूरी मुसीबत का दिन है क्योंकि) **उस फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान लाना** (कुछ) **नफ़ा न देगा** (और ये ही एक सूरत उनके बचाव की थी और वो ही है नहीं) **और** (बचाव तो क्या होता) **उन को मोहलत भी** (तो) **न मिलेगी(29) सो** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उन की बातों की परवाह न कीजिए और** (आने वाले फ़ैसले का) **इन्तिज़ार कीजिए ये भी** (अपनी सोच में आप के नुक़सान के) **इन्तिज़ार में हैं** (मगर पता चल जाएगा किसका इन्तिज़ार सही रहेगा)(30)।

नोटः- इमामत व सरदारी के लाइक़ अल्लाह तआला के नज़दीक सिर्फ़ वो लोग हैं जो अमल में भी कामिल हों और इल्म में भी।

33-सूरत-अहज़ाब

इस मदनी सूरत में '9' रूकू और '73' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۱﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ
رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿۲﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

ऐ नबी अल्लाह से डरते रहिए (और किसी से न डरिए और उन की धमकियों की ज़रा परवाह न कीजिए) **और काफ़िरों का** (जो ऐलानिया दीन के ख़िलाफ़ मशवरे देते हैं) **और** (मुसलमान होने का दिखावा करने वाले यानी) **मुनाफ़िक़ों का** (जो पर्दे के पीछे उन काफ़िरों का साथ देते हैं उनका) **कहना न** (मानिये बल्कि अल्लाह ही का कहना) **मानिये, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला बड़ी हिकमत वाला है** (और उसके हर हुक्म में फ़ाइदे और भलाइयां छुपी हैं)(01) **और** (अल्लाह का कहना मानना यह है कि) **आप के रब की तरफ़ से जो हुक्म आप पर वही किया जाता है उस पर चलिए,** (और ऐ लोगों) **बेशक तुम लोगों के सब कामों की अल्लाह तआ़ला को पूरी ख़बर है** (तुम में से जो हमारे पैग़म्बर की मुख़ालफ़त कर रहे हैं हम सब को समझेंगे)(02) **और** (ऐ नबी) **आप** (उन लोगों की धमकियों के बारे में) **अल्लाह पर भरोसा रखिये और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है** (उसके मुक़ाबिले में उन लोगों की कोई चाल कामयाब नहीं हो सकती इसलिए कुछ फ़िक्र न कीजिए)(03)

नोटः- ऊपर आयात से साबित हुआ कि दीन के कामों में काफ़िरों से मशवरा लेना भी जाइज़ नहीं दूसरे दुनिया के काम जिनका ताल्लुक़ तजरबे वग़ैरह से हो उनमें मशवरा लेने में कोई हरज नहीं।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَ مَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَ مَا جَعَلَ
اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَ هُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝۴ اُدْعُوْهُمْ
لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ مَوَالِيْكُمْ ؕ وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَ لٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ
مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝۶

आयत नं० 04 से 06

अल्लाह तआ़ला ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए और (इसी तरह) **तुम्हारी उन बीवियों को जिन को तुम मां की बराबर कह देते हो तुम्हारी मां नहीं बनाया और** (इसी तरह समझलो कि) **तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा** (सचमुच का) **बेटा** (भी) **नहीं बना दिया, यह सिर्फ़ तुम्हारे कहने की बात** (है जो ग़लत) **है, और अल्लाह तआ़ला ठीक बात कहता है और वो ही सीधा रास्ता बताता है(04)** (और जब मुंह बोले बेटे असलीयत में तुम्हारे बेटे नहीं तो) **तुम उन को** (गोद लेने वालों का बेटा मत कहो बल्कि) **उन के** (असली) **बापों का बेटा कहकर पुकारो यह अल्लाह के नज़दीक इन्साफ़ की बात की है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हों तो** (उनको अपना भाई या दोस्त कहकर पुकारो आख़िर) **वो तुम्हारे दीन के भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं, और तुम को इसमें भूल-चूक हो जाए तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं होगा लेकिन हां जो दिल से इरादा करके कहो** (तो इससे गुनाह होगा), **और** (इससे भी मुआफ़ी मांग लो तो मुआफ़ हो जाएगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है(05) नबी** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **मोमिनों के साथ तो उन की अपनी जान से भी ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं** (क्योंकि इन्सान का अपना जी भी उसको इतना नफ़ा नहीं पहुंचा सकता जितना नफ़ा नबी के वास्ते से पहुंचता है और इन्सान का अपना जी तो कभी-कभी बुराई और नुक़सान की तरफ़ भी चलता है और जब नबी सबसे बड़े हमदर्द हैं तो आपकी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त और हर काम में ताबेदारी ज़रूरी है) **और आप की बीवियां उन** (मोमिनों) **की माएं हैं, और रिशतेदार अल्लाह की किताब** (यानी शरीअत के हुक्म) **में एक दूसरे से** (मीरास का) **ज़्यादा ताल्लुक़** (और हक़) **रखते हैं दूसरे**

मुसलमानों और मुहाजिरों के मुक़ाबिले मगर यह कि तुम अपने (उन) **दोस्तों** (के हक़ में कोई वसीयत करके उन) **से कुछ भलाई करना चाहो** (या अपनी ज़िन्दगी में ही कुछ देदो) **तो वो जाइज़ है, यह बात** (तक़दीर की) **किताब में लिखी जा चुकी है** (यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत के रूहानी बाप हैं और उनकी बीवियां उम्मत की माएं हैं। और मुहाजिर व अन्सार भाई-भाई हैं मगर मीरास रिश्तेदारों ही में बान्टी जाएगी)(06)

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस के दिल में मेरी मुहब्बत अपने बाप, बेटे और सब इन्सानों से ज़्यादा न हो जाए"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मसअलाः-ऊपर आयत से साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों में से किसी की शान में कोई ज़रा सी बेअदबी इसलिए हराम है कि वो उम्मत की माएं हैं और इसलिए भी कि उन की तकलीफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचेगी जो बड़े दर्जे का हराम है। और उम्मत की मां होने का मतलब यह नहीं है कि उम्मत के सब मर्द औरत आपस में भाई बहन हो जाएं और उन का आपस में निकाह नाजाइज़ हो जाए।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾

आयत नं० 07 से 08

और (ऐ पैग़म्बर वो वक़्त याद कीजिए) **जब** (कि) **हमने सारे पैग़म्बरों से उन का इक़रार लिया** (कि अल्लाह के हुक्मों पर चलें जिनमें हुक्मों का पहुंचाना और आपस में एक दूसरे की मदद करना भी दाख़िल है) **और** (उन पैग़म्बरों में) **आप से भी** (इक़रार लिया) **और नूह और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिमुस्सलाम) **से भी, और** (यह कोई मामूली एहद व इक़रार नहीं था बल्कि) **हमने उन सब से पक्का वादा लिया(07) ताकि** (क़ियामत के दिन) **उन सच्चे लोगों से** (यानी पैग़म्बरों से) **उन की सच्चाई के बारे में पूछें** (ताकि बड़ाई साबित हो जाए और न मानने वालों पर दलील पूरी हो जाए यानी पैग़म्बरों पर अपनी वही पर चलना और आम लोगों पर उन की बात मानना वाजिब है) **और काफ़िरों के लिए** (जो नबी को मानने से इनकार करते हैं) **अल्लाह तआ़ला ने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रक्खा है**(08)

नोटः- पैग़म्बरों से जो एहद व इक़रार लिया गया वो उसके अलावा है जो इक़रार सब लोगों से लिया गया (जैसा कि मिशकात में लिखा है) और एहद पैग़म्बरों से पैग़म्बरी के फ़र्ज़ अदा करने और आपस में एक दूसरे की तस्दीक़ और मदद करने का एहद था। और एक रिवायत में है कि इस एहद में यह भी था कि वो सब इस का भी ऐलान करें कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और आख़री नबी हैं आप के बाद कोई नबी नहीं होगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٩﴾ۚ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَ اِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ
الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿١١﴾ وَ اِذْ
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ
مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ يَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَ مَا
هِيَ بِعَوْرَةٍ ۛۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَ لَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا
تَلَبَّثُوْا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾
قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا
نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَ الْقَآىِٕلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَ لَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ۙ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ
اَعْمَالَهُمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ
اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآىِٕكُمْ ؕ وَ لَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ؒ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ
فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ؕ وَ لَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ
الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۫ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّ تَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾ؕ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ ؗ وَ مَا

بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَ رَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
الْقِتَالَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَ اَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَ قَذَفَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَ تَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَ اَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ دِيَارَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ وَ اَرْضًا لَّمْ
تَطَئُوْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾

आयत नं० 09 से 27

नोटः- इन आयतों में जंगे अहज़ाब का बयान है कि काफ़िरों के बहुत से गिरोह एक बारगी मुसलमानों पर हमलावर होकर चढ़ आए थे और उन से बचाव के लिए एक ख़न्दक (गहरी खाई) शहर के बाहर खोदी गई इसलिए इस को जंगे ख़न्दक़ भी कहते हैं इस जंग में मुसलमानों को बड़े सख़्त इम्तिहान से गुज़रना पड़ा मगर वो सब मुश्किलों में जमे रहे तो अल्लाह की मदद पहुंची और दुशमनों की फ़ौजें भाग खड़ी हुईं।

ऐ ईमान वालो अल्लाह का इनआम अपने ऊपर याद करो जब तुम पर (दुशमनों की) **बहुत सी फ़ौजें चढ़ आईं फिर हम ने उन पर एक आंधी भेजी** (जिसने उनको परीशान कर दिया और उनके तम्बू उखाड़ फेंके) **और** (फ़रिशतों की) **ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुम** (में आम लोगों) **को दिखाई न देती थीं** (जिन्होंने काफ़िरों के दिलों में रौब डाल दिया कि वो घबरा कर भागने को मजबूर हुए), **और अल्लाह तआला तुम्हारे** (उस वक़्त के) **कामों को देखते** (थे तुम ने एक लम्बी चौड़ी और गहरी ख़न्दक़ खोदने में बड़ी मेहनत उठाई और काफ़िरों के मुक़ाबिले के लिए बड़ी मज़बूती के साथ जमे रहे तो इस पर ख़ुश होकर तुम्हारी मदद कर रहे) **थे(09)** (यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जब कि वो** (दुशमन) **लोग तुम पर** (हर तरफ़ से घेरा करके) **चढ़ आए थे ऊपर की तरफ़ से** (भी) **और नीचे की तरफ़ से** (भी यानी कोई क़बीला मदीने के नीचे की तरफ़ से और कोई क़बीला उसकी ऊंचाई की तरफ़ से) **और जब कि आंखें** (डर दहशत से) **खुली की खुली रह गईं थीं और कलेजे मुंह को आने लगे थे और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह की बातें सोचने लगे थे** (जैसा कि सख़्त मुश्किलों में ऐसी बातें दिल में आने लगती हैं जो अपने बस में न होने की वजह से कोई गुनाह नहीं)(10) **इस मौक़े पर मुसलमानों का** (पूरा) **पूरा इम्तिहान किया गया**

(जिसमें वो पूरे उतरे) **और उनको सख़्त** (आज़माइश में) **हिलाया गया**(11) **और** (यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जब** (कि) **मुनाफ़िक़ लोग और** (वो) **लोग जिनके दिलों में** (शक की) **बीमारी है यह कह रहे थे कि हम से तो अल्लाह ने और उसके रसूल ने सिर्फ़ धोके ही का वादा कर रक्खा** (है यानी रोम और फ़ारस जीतने की जो ख़ुशख़बरी सुनाई गई यह सिर्फ़ धोका) **है**(12) **और** (यह क़िस्सा उस वक़्त का था) **जब कि उन** (मुनाफ़िक़ों) **में से कुछ लोगों ने** (दूसरे लोगों से) **कहा कि यसरब** (यानी मदीना) **के लोगो** (यहां) **ठहरने का मौक़ा नहीं** (क्योंकि यहां रहना मौत के मुंह में जाना है) **सो** (अपने घरों को) **लौट चलो, और कुछ लोग उन** (मुनाफ़िक़ों) **में नबी** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **से** (अपने घर वापस जाने की) **इजाज़त मांगते थे कहते थे कि हमारे घरों में हिफ़ाज़त** (का इन्तिज़ाम) **नहीं है** (यानी सिर्फ़ औरतें, बच्चे रह गये हैं दीवारों से तसल्ली नहीं कभी चोर घुस आएं) **हालांकि वो** (उनकी सोच में भी) **बेहिफ़ाज़त नहीं** (यानी उनको चोरी वग़ैरह का ख़तरा नहीं है बल्कि) **ये सिर्फ़ भागना ही चाहते हैं**(13) **और** (उनकी यह हालत है कि) **अगर मदीने में उस के चारों तरफ़ से उन पर कोई** (दुशमनों की फ़ौज) **आ घुसे फिर उन से फ़साद** (यानी मुसलमानों से लड़ने) **को कहा जाए तो ये** (फ़ौरन) **उस** (फ़साद) **को मान लें और** (अपने) **घरों में बहुत ही कम ठहरें** (और घरों की हिफ़ाज़त का कुछ भी ध्यान न करें इससे साफ़ मालूम हुआ कि असल में उनको मुसलमानों से दुशमनी और काफ़िरों से मुहब्बत है इसलिए गिनती बढ़ाकर भी मुसलमानों की मदद करना पसन्द नहीं करते बाक़ी घरों का तो बहाना है)(14) **हालांकि ये लोग** (इससे) **पहले अल्लाह से एहद कर चुके थे कि** (दुशमन के मुक़ाबिले में) **पीठ न फेरेंगे** (यह एहद उस वक़्त किया था जब कि जंगे बद्र में कुछ लोग शरीक होने से रह गये थे उनको देख कर कुछ मुनाफ़िक़ भी कहने लगे कि अफ़सोस हम शरीक न हुए ऐसा करते वैसा करते जब वक़्त आया सारी पोल खुल गई), **और अल्लाह से जो** (इस तरह का) **एहद किया जाता है उसकी पूछ ज़रूर होगी**(15) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि तुम को भागना कुछ नफ़ा नहीं दे सकता अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो और इस** (भागने की) **हालत में सिवाए थोड़े दिनों के** (कि वो बची उम्र है) **और ज़्यादा** (ज़िन्दगी से) **नफ़ा नहीं उठा** (सकते यानी भाग कर उम्र नहीं बढ़ सकती क्योंकि उस का वक़्त नसीब में तय है, और जब तय है तो अगर न भागते तो भी वक़्त से पहले मर नहीं) **सकते**(16) (और उनसे) **यह भी कह दीजिए कि वो कौन है जो तुम को अल्लाह से बचा सके अगर वो तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे** (जैसे तुम को हलाक करना चाहे तो क्या तुम को कोई बचा सकता है जैसा तुम भाग जाने को समझते हो) **या वो कौन है जो अल्लाह की महरबानी**

को तुम से रोक सके अगर वो तुम पर महरबानी करना चाहे (जैसे वो ज़िन्दा रखना चाहे जो कि दुनिया की रहमत है तो कौन इस रहमत को रोक सकता है जैसा तुम जंग में ठहरने को ज़िन्दगी के लिए ख़तरा समझते हो), **और** (वो लोग सुन लें कि) **अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएंगे** (जो नफ़ा पहुंचाए) **और न कोई मददगार** (जो नुक़सान से बचाए)(17) **अल्लाह तआ़ला तुम में से उन लोगों को** (ख़ूब) **जानता है जो** (दूसरों को लड़ाई में जाने से) **रोकते हैं और जो अपने** (ख़ानदानी या बस्ती के) **भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आजाओ** (वहां अपनी जान क्यों देते हो) **और** (उनकी बुज़दिली और लालच की यह हालत है कि) **लड़ाई में बहुत ही कम** (यानी बस नाम के लिए) **आते हैं**(18) (और आते भी हैं तो) **तुम्हारे साथ लालच लिये हुए** (कि ग़नीमत के माल में कुछ हिस्सा मिल जाए), **सो जब** (कोई) **डर** (का मोक़ा) **पेश आजाता है तो उन को देखते हो कि वो आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें चकराई जाती हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छाई हो** (यह तो बुज़दिली का असर हुआ), **फिर जब वो ख़तरा दूर हो जाता है तो तुम्हारे सामने** (ग़नीमत के) **माल के लालच में तेज़-तेज़ ज़बानें चलाते हैं** (कि क्या हम शरीक नहीं थे हमारी ही मदद से तुम को यह जीत मिली है), **ये लोग** (असल में पहले ही से) **ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआ़ला ने उनके सारे** (नेक) **काम** (पहले ही से) **बेकार कर रक्खे हैं** (आख़रत में कुछ सवाब न मिलेगा), **और यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है**(19) (हमलावर फ़ौजों के चले जाने के बाद भी) **वो यह समझ रहे हैं कि** (अभी तक दुशमनों की) **फ़ौजें गई नहीं** (और बुज़दिली में उनकी यह हालत है कि) **अगर** (मान लो) **ये** (गई हुईं) **फ़ौजें** (फिर लौट कर आजाएं) **तो** (फिर तो) **ये लोग** (अपने लिए) **भी पसन्द करें कि काश हम** (कहीं) **देहातों में बाहर जा रहें कि** (वहां ही बैठे बैठे आने जाने वालों से) **तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें** (वो घमासान जंग अपनी आंखों से न देखें), **और अगर** (कुल या कुछ देहात में न जा सकें बल्कि) **तुम ही में रहें तब भी** (बस नाम को) **ऐसा ही लड़ें**(20) (और आगे मुनाफ़िक़ों को शर्म दिलाई जाती है जो कि मुसलमान होने का दावा करते हैं कि) **तुम लोगों के लिए यानी ऐसे आदमी के लिए जो अल्लाह से और आख़रत के दिन से डरता हो और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो** (यानी पूरा मोमिन हो उसके लिए) **रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का** (मौजूद होना) **एक अच्छा नमूना था** (कि जब आप ही शरीक रहे तो आप से ज़्यादा कौन प्यारा है कि वो शरीक न हो और अपनी जान बचाए फिरे)(21) **और** (आगे मुनाफ़िक़ों के मुक़ाबिले सच्चे मोमिनों का ज़िक्र है) **जब ईमानदारों ने उन फ़ौजों को देखा तो कहने लगे कि यह वो ही** (मौक़ा) **है जिसकी हम को**

अल्लाह व उस के रसूल ने ख़बर दी थी और अल्लाह व उसके रसूल ने सच कहा था, और इस (क़िस्से) **ने उन के ईमान और ताबेदारी को और बढ़ा दिया(22)** (और) **इन मोमिनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से एहद किया था उस में सच्चे उतरे** (कुछ लोग जो जंगे बद्र में शरीक होने से रह गये थे उन की तमन्ना कुछ कर दिखाने की थी यह ऐसे लोगों का ज़िक्र है) **फिर उन** (एहद करने वालों) **में** (दो क़िस्में हो गईं) **कुछ तो वो हैं जो अपनी बात पूरी कर चुके** (यानी एहद पूरा करने में आख़री दम तक मुंह नहीं मोड़ा लड़ते-लड़ते शहीद हो गये) **और कुछ उनमें इन्तिज़ार में हैं** (अभी शहीद नहीं हुए), **और** (अब तक अपने इरादे) **ज़रा नहीं बदले(23)** (आगे इस जंग के होने में छुपे भेद बताते हैं कि) **यह क़िस्सा इस लिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला सच्चे मुसलमानों को उनकी सच्चाई का फल दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या चाहे उनको** (निफ़ाक़ से) **तौबा की तौफ़ीक़ दे, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान** (है इसलिए तौबा का क़ुबूल हो जाना अचम्भे की बात नहीं इसमें तौबा के लिए उकसाया गया) **है(24) और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों** (मुशरिकों) **को उनके ग़ुस्से में भरा हुआ** (मदीने से) **हटा दिया कि उनकी कुछ भी तमन्ना पूरी न हुई, और जंग में अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया** (यानी काफ़िरों को पूरी तरह लड़ने की नौबत भी न आई कि पहले ही भागना पड़ा), **और** (इस तरह काफ़िरों का हटा देना कुछ अजब न समझो क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाला** (और) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **है** (उस को कुछ मुश्किल नहीं यह तो मुशरिकों का हाल हुआ)**(25) और** (दुशमनों में दूसरा गिरोह यहूदियों का था आगे उनका ज़िक्र है) **जिन किताब वालों ने इन** (मुशरिकों) **की मदद की थी उन को** (अल्लाह तआ़ला ने) **उन के क़िलों से** (जिन में वो पनाह लिये हुए थे) **नीचे उतार दिया और उनके दिलों में** (मुसलमानों) **तुम्हारा रौब बिठा दिया** (जिस से वो उतर आए और फिर) **कुछ को तुम क़त्ल करने लगे और कुछ को क़ैद कर लिया(26) और** (अल्लाह ने) **उन की ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम को मालिक बना दिया और ऐसी ज़मीन का भी** (तुम को मालिक बना रक्खा है) **जिस पर तुम ने** (अभी) **क़दम** (तक) **नहीं रक्खा** (इसमें ख़ुशख़बरी है आगे की जीतों की) **और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता** (है इसलिए यह काम कुछ मुश्किल नहीं) **है(27)**

يٰاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ
سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾ وَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا
عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِىِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

आयत नं० 28 से 30

नोटः- हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों ने बड़ी तंगी की हालतों में भी आप के साथ सब्र व तसल्ली से गुज़र बसर की जब मुसलमानों को ख़ुशहाली आई तो उन्होंने चाहा कि उन को दिये जाने वाला ख़र्च बढ़ा दिया जाए। उनके रूतबे के हिसाब से उनकी यह मांग पसन्द नहीं की गई और उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं।

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप अपनी बीवियों से कह दीजिए कि तुम अगर दुनिया की ज़िन्दगी** (की ऐश) **और उस की बहार चाहती हो तो आओ मैं तुम को कुछ माल व सामान** (दुनिया का) **देदूं और** (सामान देकर) **तुम को भलाई के साथ विदा कर दूं** (यानी सुन्नत के मुवाफ़िक़ तलाक़ देदूं ताकि जहां चाहो जाकर दुनिया का ऐश हासिल करो)(28) **और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो** (और मतलब इस जगह अल्लाह को चाहने का यह है कि) **उसके रसूल को** (चाहती हो यानी ग़रीबी की इस हालत में रसूल के निकाह में रहना चाहती हो) **और आख़रत** (के ऊंचे दर्जों) **को चाहती हो** (जो कि रसूल की बीवी होने पर मिलने वाले हैं) **तो** (यह तुम्हारी नेकी है और) **तुम में नेक काम करने वालों के लिए अल्लाह तआला ने** (आख़रत में) **बड़ा इनआम तैयार कर रक्खा** (है यानी वो सवाब जो नबी की बीवियों के लिए ख़ास) **है(29)** (और आगे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) **ऐ नबी की बीवियों जो तुम में खुली ग़लती करेगी** (मुराद इससे वो बातें हैं जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तंग व परीशान हों तो) **उस को** (इस पर आख़रत में) **दो गुनी सज़ा दी जाएगी** (यानी दूसरे आदमी को इस काम पर जितनी सज़ा मिलती उससे दो गुनी सज़ा होगी)**, और यह बात अल्लाह को** (बिल्कुल) **आसान** (है यह नहीं कि दुनिया के हाकिमों की तरह सज़ा बढ़ाने से किसी के बड़ा होने से रूकावट हो जैसा कि कभी-कभी देखा जाता) **है(30)**

नोटः- जब हुज़ूर की तरफ़ से बीवियों को साथ रहने या अलग हो जाने का इख़्तियार दिया गया तो सभी बीवियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहना पसन्द किया तंगी की हालत में अलग होना गवारा नहीं किया।

मसअलाः-ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जब मियां बीवी का मिज़ाज न मिले तो बेहतर यह है कि बीवी को हक़ दिया जाए कि शौहर की मौजूदा हालत पर तसल्ली से रहना चाहे तो रहे वर्ना सुन्नत के मुताबिक़ तलाक़ देकर इ़ज़्ज़त के साथ रूख़सत कर दिया जाए।